

बुद्धिबद्धिपा

जंगेश गुंजन

अपना दिस सँ इएह जे :

□ ई नाटक मैथिलीमे उपलब्ध रंगमंचक परम्परासँ फराक लोकक युगीन आवश्यकता आ' तत्त्वन्व प्रसंगवश प्रथम बेर चौबटिया-मैथिलीमे लिखल गेल अछि । समकालीन भारतीय भाषा, मुख्यतः हिन्दीमे चौबटिया नाटक विशेष लोकप्रिय आओर सार्थक विधाक रूपमे अपन सामाजिक भूमिकाक निर्वाहमे महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि, जखनकि मैथिलीमे एहि प्रकारक कोनहुँ उच्चावच नहि । यद्यपि एकाग्रिक जागरूक नाटककार मैथिलीमे कथ्यक स्तर पर कार्यरत छवि परन्तु रंगमंचहिक परम्परा-परिधिमे खेरायल आ जे' कि आशुक रंगमंच मैथिलीमे वड़ पछुआयल ते' बहुलांश प्रभावहीन जकाँ अछि । ते' चौबटिया-नाट्य शैलीमे रचल गेल ई नाटक । यद्यपि एकरा प्रस्तुत करवामे लगयवला समय, अवधिक दृष्टिमें बेसी छैक तथापि एकर सम्पूर्ण कथ्य आ प्रस्तुतिक शैली तेहन सहज, सुलभ आ लोकग्राही बनाओल गेलैक अछि जे थिक ई चौबटिये-नाटक मैथिलीमे पहिल प्रयास । एकर एतकहि टा मामूली सन सीमा छैक जे एतेक टा नाटक कोनो चौबटिया पर ठाढ़े-ठाढ़ देखवामे दर्शकके' किछु दिक्कति भऽ सकैत छैक । मुदा यदि पूर्ण तैयारीसँ एकरा प्रस्तुत कयल जाइक त' लोक देखवा लेल वाध्य भऽ सकैत अछि ।

□ फराकसँ कहबाक आवश्यकता नहि जे चौबटिया नाटकक मूल विशेषता एकर युगीन कथ्य आर सहजहि सुलभ प्रस्तुति योग्य होयब थिक । बिना कोनो लम्फ-लम्फा, बिना कोनो अतिरिक्त प्रसाधन, वेश-भूषा तथा मंच-व्यवस्था केने, बड़ सरल आ' थोड़ व्यवस्थामे नाटक-तैयारी कऽ कऽ ओकरा

बाट पर, बाजार जाइत कि कार्यालयमें पर घूरैत, कि रिश्ताबला, देवा-
यला, मजूर वा चिनिया बदाम आ' ताबु बेचनिहार जन-साधारण प्रेक्षक-
दर्शकके अनायासहि सङ्कक कातमें, झील चौवट्टी पर वा कोनो मुषकड़ पर
उपलब्ध कराओख जाइक - सामान्य जनक बीचमें अभिनीत भऽ जयवाक से
विशिष्ट क्षमता मुनकड़ वा चौवट्टिया नाटकमें रहैत छैक ।

□ एहन नाटकक समाद सोझा-सोझी साधारण दर्शक लोक चेतना धरि
अनेरे उपरि सकयामे सहजहि सक्षम होइत छैक । रंगमंच एखनहुँ संभ्रांत-
ताक परिधिमें चकभाउर द' रहल अछि । मैथिलीक सेहो । तेँ चौवट्टिया
नाटक कला-चेतनासँ भरल साधनहीन कलाकारक सस्त आ तेजगर माध्यम
सावित होइछ जे करीब-करीब आबिक जागतमें कलाकार आ संस्थाके एक
रूपमें मुक्त रहैत छैक, जखन कि सम्बद्धता एकर सङ्क, बाजार, स्कूल-कॉलेज
सभक जन-सम्पर्कक बनि जाइत छैक । कम खर्चमें बेसी व्यापक गंहीर प्रभाव
आर कला-प्रदर्शन । सांस्कृतिक चेतनाके प्रासंगिक बनबैमें सृजनात्मक गति
देवामे प्रायः चौवट्टिया नाटक सन लोक-माध्यम आइ कोनहुँ आन साहित्य-
कला-विधा नहि ।

□ लिखल त' ई नाटक बहुत पहिनहि भेल छल । एक अभिनय प्रदर्शन
समय नहि भेल छल । तकरा मैथिलीक युवा कवि आ प्रतिभावान रंगकर्मी
श्री विभूति आनन्द तथा एहने किछु युवा, २२ ई० क अमर नाथ आ जयन्ती
समारोहमें अंजलि वर्मा, आनन्द मोहन, गणपति मल्लिक, राजल, धीरज,
शंभुदेव, प्रेम कुमार, गणेश आ, अरविन्द कुमार, बामुकी नाथ आ,
मन मोहन मिश्र, पञ्चपति नाथ विष्णवी तथा अरविन्द कुमार वर्मा कयलनि
अपना निर्देशन तथा अभिनय सँ । तदर्भ स्वभाविके थिक जे हम विभूति
जीक आ सभ कलाकारक खूब कृतज्ञ छियनि । पूर्वक नाम "चौवट्टिया
पर" छल ।

□ एहि नाटकके पुस्तकाकार प्रकाशनक जे अवसर चेतना समिति
हमरा देखल अछि ताहि हेतु हम हार्दिक आभार मानैत छियनि विशेषतः
समितिक, अध्यक्ष तथा सचिव, डॉ० अनिरुद्ध आ तथा श्री राजेन्द्र शाक ।

□ प्रेसक मुद्रक श्री देवेन्द्र आ, जीक जे स्नेह सहयोग हमरा भेटल
अछि तदर्भ हुनको हम कृतज्ञ छी ।

किछु आवश्यक संकेत :

एहि नाटकक विषयमें

□ एकर शिल्प सचकदार छैक तेँ ई नाटक सोझा-साझ मंचसँ लऽ कऽ
चौवट्टी वा गामक भगवती स्थानमें पर्यन्त सहजतापूर्वक कएल जा सकैत
अछि ।

□ पहिल दृष्टिमें पाव किछु बेसी दुष्टास्त छैक, मुदा से छैक नहि ।
कियेक त' पाव सभ सेहो दर्शकक भाग छैक । तेँ स्थान बदलि-बदलि कऽ
अपन मंच-प्रवेश तथा बाहर जयवाक जैनी मात्रसँ कथानकक अगिला आद-

शकता क अनुसार दोसर चरित्र सेहो बनि जाइत छैक । निर्देशकक तत्परता-
क अपेक्षा अवश्य रहतैक एहिमे ।

□ तेँ मामूली पोशाक-परिवर्तनसँ दर्शकमे मिलल अभिनेता दोहरा
तेहरा भूमिका सहजहि कऽ लऽ जा सकैछ ।

□ नाटक मुख्यतः व्यंग्य छैक तेँ दर्शककेँ एहन ढंग कतहुसँ अखरतनि
नहि, यदि निर्देशक चुरतीसँ संवाद आ अभिनयक अलगत्वक निर्वाह कऽ
सकथि ।

□ ओना प्रमुखतः चारि युवक, तीन आवसी, एक टा बूढ़, एक टा एक-
सहआ लोक तथा साँवरिया इमेह एतथे पाठक ई कथानक छैक । यदि अभि-
नेता उपलब्ध नहि हो तँ ।

□ नाटक स्थानीय समस्या सभक संदर्भमे सृजित भेल अछि । उपलब्ध
शेला पर संवादमे मामूली परिवर्तनसँ स्त्री अभिनेता सेहो अनायास जोड़ल
जा सकैछ छैक । से स्थानीय जखरत पर निर्भर छैक आ' निर्देशकीय दृष्टि
पर । ओना दर्शक-समूहसँ सेहो तारी-पात धीचल जा सकैछ छैक ।

□ स्थान-स्थान पर देल गेल दृश्यबंध जवाँ, दृश्य-रचना, अभिनयक
विवरण निर्देशककेँ प्राथमिक सहयोग भरिक नेतसँ देल गेल छैक । निर्देशकीय
दृष्टिकेँ बाधा होइक तँ निर्देशक स्वतन्त्र मौलिक दृश्य रचना तथा अभिनय-
भंगिमा तैयार कऽ लेथि ।

□ ई बात निर्देशकक दृष्टि पर निर्भर छनि जे ओ एहि कथानकमे
आवल सर्वांग कथक आओर गंभीर प्रस्तुतिक पक्षमे एहि आलेख के बिना
'विकलांग' कयने की आ' केहन परिवर्द्धन कऽ लैत छथि । ई करवाक हुनका
पूरा स्वतन्त्रता छनि । मुदा हमरा (लेखक)सँ एक बेर एहि विषयमे गप्प कऽ
लेथि—बिट्टिवेसँ भनै ।

□ एहि नाटकमे 'मेक अप' कयल जा सकैछ आ नहियो । जेहन
अवसर ।

□ तकर नाम राखल गेल — बुधिबधिया

□ ई नाटक संपूर्ण नवतुरिया

रंगकर्मी पीड़ीक नाम—

जे जन साधारणक प्रति

कएल जा रहल व्यापक गंभीर राजनैतिक

नाटककेँ जनताक पक्षमे देखार करवाक लेल

संकल्पित अछि । ...□

[कोनो एकटा जीवटिया । गूणभूमिमे लाउड स्पीकर पर फिस्सी गाना । संभव हो तँ “पब्लिक है हम, सब जानते हैं” । तीन विससँ आसि-आसिकऽ लोक जमा भऽ गेल छैक । लोकक भौड़ जकाँ । सबक मुखाकृतिसँ बुझाइत छैक, जेना सब उत्सुक हो, जे की होइ बला छैक एतऽ । दर्शकक आँखि ओहि विस उठल, जाहि तरफसँ गीतक ध्वनि आसि रहल छैक । कनेक काल लोक किछु होपबाक आशामे ओरहर देखैत रहैत छैक । तखन ओहि बीचसँ दू विससँ दू व्यक्ति साधारण वेषभूषामे आगँ अबैत अछि । ओहिमे एक हावभावसँ ‘नेतापुमा’ लगैत अछि आ दोसर कलाकार जकाँ । अनेक ओ पररपर एक-दोसरकेँ देखैत अछि । तखन पहिल व्यक्ति, जे कलाकार सन बुझाइत अछि, दोसर केँ पुछैत छैक ।]

पहिल लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

दोसर लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

पहिल लोक : [एँड़ी पर ठाढ़ भऽ कऽ चौतरफा देखैत] हमरा जनैत ई सब मोटय जे एतऽ एकट्ठा छथि से सब एक-दोसरसँ इएह जानऽ चाहैत छथि जे ओ एतऽ किथेक अगलाहे ।

दोसर लोक : हमरा जनतबे से बात नहि छै ।

पहिल लोक : हमरा जनतबे सएह बात छै ।

दोसर लोक : तँ कहैत किएक ने छिवनि ?

पहिल लोक : अहाँ कहि विपरीत ।

दोसर लोक : नै, अहाँ बता दिगीक ।

पहिल लोक : नै-नै, अपने....

दोसर लोक : नै-नै, अपने....

दोसर लोक : आह, ई कतहू होअय, पहिने थोड़ेक अपने बता देल जाओ....

पहिल लोक : वेश पहिने कनीक अपने....

तेसर लोक : [एहि बीच एकटा कपो जोरसे कहैत छैक] चल भाय, चल एतऽ स' । ई लोकनि पहिने अपने तँ पहिने अपने करैत रहलाह आ भपटिवाहीवाली गाड़ी छुटि जायत । चल चल । [ओ जयबाक लेल उछत होइछ एक-दू डेग बढ़ियो जाइत अछि । तखने पाछाँसँ कपो जेना सोर करैत होइ]

पहिल लोक : ओ भाय माह्व, कतऽ चलि देखियँ ओ, कनी चम्हू-चम्हू । कियेक विदा भऽ गेली ओ ?

[जाइत लोक ठमकि जाइत अछि । घुरिकाऽ देखैत छैक । तखने पहिल आ दोसर लोक एक-दोसरा के देखैत अछि जेना किछु निश्चय कऽ रहल हो । किछु आगाँ बढ़ि कऽ दर्शक के सम्बोधित करैत अछि । पहिल लोक जेबीसँ एकटा मोचराफल कागजक टुकड़ी निकालैत अछि, जाहि पर लाल-लाल अक्षरमे किछु लिखल छैक । ओ कागज ऊपर उठाकऽ देखबैत बजैत अछि ।]

पहिल लोक : हँ यी भैयारी, कतऽ चललीं यी ? चम्हू कनी । ई जे हमरा हाथमे देखि रहल छी से कागजक टुकड़ी नै, एकटा पोस्टरक टुकड़ा छियँ । एकटा बात होय वला छै । पढ़ाय कियेक लगलीं अपने ? कतेक घेर्य नै राखि सकै छी ? प्रतीक्षा नै कऽ सकै छी ? एकवैन टनटनाकऽ विदा कियेक भऽ गेली ?

तेसर लोक : आर की यी ? अहाँ दुनू गोटेयमे पहिने अपने तँ पहिने अपने वाझल छल । जे बात छै, यदि सत्ते छै तँ कहै ने किए जाइत छियँ ?

दोसर लोक : विचित्र बात यी महाशय जी । ई पहिने अपने तँ पहिने अपने अहाँक विल्ली टफसालक माया भिक । कोनो कि हमरे लोकनि पहिले-पहिल थोड़े कऽ रहल छी ? वर्षक वर्ष सँ चलि आबि रहल अछि । आ एखन कतोक वर्ष ठाठतँ चलत [व्यंग्य सँ हँसैत जकाँ] आ, वृक्षन रहबाक बात ? वृक्षन तऽ सबके सब बात रहैत छै, कपो धाकरो बतबैत फिरै छै ?

तेसर लोक : कियेक ने बतबैत छैक । विरकुल बतबैत छै ।

पहिल लोक : ओह, लखन भायजी एकटा बात कहल जाओ—अहाँ के महीन-बारी दरमाहा कते टाका भेटिये आ, बाइली आमदनी कतेक अछि ?

तेसर लोक : [तमसाइत] विचित्र बेकूफी वला प्रश्न । एकयम मारि छाव दसा गण करैत छी, अहाँ लोकनि । बीच चौबट्टी पर ठाढ़ कोनो भल-मानुष लोकके अहाँ लोकनि बेज्जति करैत छियँक । ओकर बाइली आमदनीक हिसाब पूछै छियँक, ठीके मारि छाव वला कार्य....

दोसर लोक : जरूर मारि छाववला कार्य करैत छी । कियेक तँ अहाँ सन लोकक समाजमे रहै छी । दुर्भाग्यसँ कनी पड़लो लिखल छी—दू अच्छर । अहाँ नहियो कहैत छी तीसो अहाँ समक गुप्त बात के बुझि जाइ छी । मारि छाव वला काज तऽ करिते छी । कियेक तँ अहाँक बुधबधिया सब से बुझि जाइ छी । [तेसर लोक क्रोधे लाल भऽ जाइत छैक ।]

पहिल लोक : अच्छा जाय दियो । ई कतहू जे अहाँ अपन तेसरकी सारिसँ विवाह कहिया कऽ रहल छी ? [तेसर लोक अश्वन्त तामसमे ओकरा लन पहुँचि जाइत छैक, ओकर कुरता पकड़ि लैत छैक आ ऊँच स्वरे बजैत छैक ।]

तेसर लोक : सार, बदमाश । एको रती वजबाक शिष्टाचार नहि । वेहुवा नहि लन । हम तोरा अदालतिमे ठाढ़ करबाकऽ छोड़ब । मान-हानिक मोकदिमा कऽ कऽ । एतेक रास लोक हमर गवाही अछि । एतेक लोकक बीचमे तो हमरा अपमानजनक कया कहलऽ अछि । हम तोरा कोईमे ठाढ़ करब सार ! लोकके चीन्हेकऽ वाजल करऽ । जनै छऽ जे हम के छी ? एखन तोरा बुझले नहि छऽ । बापक बियाह पितिया समाइ देखा देलापर बुझबहक । अछि चीन्हे कऽ... । [दुनू गोटेय एहि क्रोधित तेसर लोकके देखैत छैक । मुवा बराबल नहि अछि । दोसर लोक कहैत छै ।]

दोसर लोक : व्यक्ति चीन्हाक ! छीके तँ । अपनहुँ लोकक श्रेणीक लोक छियै ? [व्यंग्यसँ । पुनः रहस्य खोलबाक उपक्रम करैत जकाँ] बात अपने जगैत छियै, तँयो एतेक रास लोकसँ नुकरै छी । अहाँ के खूब बाइली आमदनीयों अछि आ अपन तेसरकी सारि सँ सेहो, एएह दु- त्रि दिनमे बिबाहो करऽ जा रहल छी । परन्तु लोक सबसँ नुकरैत छी । आ हम मुपत कहे छी तँ मोट गलासँ धमकी दैत छी । अहाँ भोम्हायंस छी ।

तेसर लोक : हे देख ले... हे खबरदार, चीन्हा राखऽ... हमरा....

दोसर लोक : हँ हँ, एएह ने कहू जे अहाँक फलां सम्बन्धी पुलिस विभागक बड़का आफिसर छथि तँ भिल्लां सम्बन्धी उद्योग विभागक मंत्री छथि...अपनेक समधि फलां श्रेयक एम० एल० ए० छथि, हुनका मुख्यमंत्री जी प्राणोर्ष वेणी मानैत छथिन । एतेक धरि जे कखनो यदि अपनेक समधि के लम्बी लागि जाइत छनि आ दुइयो भिन्टक खातिर ओ ड्राइंग-रूमसँ बाहर चलि जाइत छथिन तँ....

पहिल लोक : [बीचहिमे] मुख्य मंत्री जी आकुल-व्याकुल भऽ कऽ ताकऽ लगैत छथिन—“नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे दूँदूँ रे साँवरिया ! पिपा-पिपा रटते रटते हो गऽ रे साँवरिया....” मुख्य मंत्रीजी सरसर गावऽ लगैत छथिन । गाँधि-गाँविकऽ ताकऽ लगैत छथिन—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे दूँदूँ रे साँवरिया। [दुनू गोठय मिलिकऽ ई गीत, अपन-अपन बहिना हाथ कान पर बऽ बागा हाथ तिरछा कऽ कऽ ऊपर बिस छठीने गावऽ लगैत अछि । गीत करीब एक भिन्क धरि चलैत रहैत छैक । कि तावतहि भीड़के जोड़ैत एकटा व्यक्ति प्रवेश करैत अछि । ओ छाथीक खरिखाना जुगी पहिरने अछि आ काज कएल बेलवार कुरता । तकर नाम साँवरिया छैक]

साँवरिया : साँवरिया के बजा रहल छी ? एएह छी हम । हम आवि गेली । हम आवि गेली । की बात छैक ? हम तँ बीड़ी पीनेत रही कि मोहर गुरीतगर आवाज ठेकल कानमे आ हम लत्ते-फत्ते दोड़िकऽ आवि गेली । हमरा चुनल अछि जे हम फिल्मी

गीत जकाँ लोकप्रिय छी लोकमे । स्मरण करितहि उपस्थित भऽ गेलहुँ । हमरा कानमे तँ खासी लता मुँगेसकरक आवाज पड़ल ताकय । उपस्थित !

दोसर लोक : उपस्थित छी तँ क्यूँ चूल्हि वृत्तमाधवजी ! हद् बात भेल ! एकटा फिल्मी गीतक पाँती पर अपर्याप्त दोड़ल चल अपलाह । कोनो काज-धंधा नहि छऽ ? [अण भरि एक कऽ] अबलौहें तँ एतऽ अपनेक स्वागतक कोनो तैयारी नहि अछि । गेल जाओ, मुख्य मंत्री जी ताकि रहल छथि । ओतहि जाओ । [साँवरिया मुँहमे बीड़ी लगवैत अछि आ रुष्ट जकाँ वाजऽ लगैत अछि]

साँवरिया : काज-धंधा ! की, जनताक कोनो बिरह गीत पर जनताक बीचमे सुरजत उपस्थित भऽ गेनाय कोनो काज-धंधा नहि भेलै ? [तोचैत फमे] आ' मुख्य मंत्री जी ? ओ तँ दिल्ली गेल छथि ।

दोसर लोक : दिल्ली गेल छथि [किछु चिंतित जकाँ होइत]

साँवरिया : हँ हँ ! एहि हफ्तामे दिल्ली कहाँ जा सकल छलथिनहें । बाइए तऽ भीरे रेडियो कहलकिये । हँ, आइये त' । हमरा चित्कुल नीक जकाँ स्मरण अछि । रेडियो कहने छल जे कोनो प्रार्थना-सभा करऽ गेलाहए । ओम्हरेसँ चल जयता बम्बई । ओतऽ हुनका अखिल भारतीय पूँजी विकास संघक अध्यक्ष सँ भेंट करवाक छनि ।

दोसर लोक : अच्छाऽ !

साँवरिया : हँ ! [अपने पर मूग्ध होइत] रेडियोक बात तँ हमरा तुरंत कंठस्थ भऽ जाइए । एकदम ओही छन । कथादुसँ किछु पुष्टि लिपऽ । [दर्शक बिसि देखैत, जेना प्रशंसाक अपेक्षा करैत अछि] कंठस्थ अछि ।

पहिल लोक : जेना आइ की सब पाद कयलौहें ?

साँवरिया : आव सौसे देह भरिक १९०५१ छोट-पैथ सभ अस्पतालक रोगीक बिषयमे, ओकरा परिवार वला सभक बास्ते नित्य दिन स्वास्थ्य बुलेटिन जारी कमज जयत ।

क्यों एक मोटय : [उत्ताह मे] की कहलिये ! सभ अस्पतालक ? राजनगरी अस्पतालक भाय साहेब ? हमरो बाप दुखित छथि कएक दिनसँ ! तखन तऽ हुनको बिषयमे छपतनि ? [जेना निश्चित होइत] कतेक पैघ चिन्ता सतम भऽ जावत जे बाबू नीके छथि । हमरा तँ मलिक्वा छुट्टीए ने दैए जे जा कऽ एक बेर देखियो अवितिमनि । [एक क्षण चुप रहि साँवरिया के पुछैत छैक] की जो आव सब रोगीक समाचार होअऽ लगलै रेडियो पर ? गरीबो-गुरवाक....?

साँवरिया : तखन की ? रेडियो बजलैए । [ओकरा डँडैत जकाँ] हम कि कोनो अपना दिसत गड़ि कऽ कहि रहल छियऽ सोरा ? [आ तखने बीचहिमे जेना चिन्तित होइत कहऽ लगैत छैक] "हे प्रभो ! बड़ अनर्थ भऽ जेतै ! अन्हार ! महान्धकार । हे ईश्वर एतेक पैघ राष्ट्र पर एतेक पैघ अन्धकार ! [क्षण भरि चुप रहि कऽ] हमरा लोकनिक एतेक पैघ महान नेताक, एखन एहन समयमे, देशसँ उठि जायब... ओह, हमर तँ हृदय टुकड़ी-टुकड़ी भऽ रहल अछि । [जेना शून्यमे धौआइत] अन्धकारक एक महासमुद्र ! कारी महान्धकार....

बोसर लोक : केहन अन्धकार बंधुवर ! अहाँ बड़ व्याकुल भऽ गेली । चित्त स्थिर करू । एकटा बीड़ी सेसि लियऽ । संभव छै....संभव छै जे....

साँवरिया : किछु संभव नै छै एतऽ (भर्त्सनाक स्वरमे) एतऽ एखन देसक एतेक रात लोक उपस्थित छथि मुदा एक भोरे जारी कएल गेल बम्बे अस्पतालक वृत्तेडिनक बारेमे एकटा पब्लिक प्रार्थना कऽ कऽ अपन एहि नेताक रोगी शरीरकेँ दीर्घायु बनयवाक प्रार्थना नहि कऽ सकैत छथि । धिक्कार ! एक हजार बेर धिक्कार अछि । बन्दा-बेहरी फल-फल-हरीक तँ कथा कराक, एहन महान आत्माक प्राण रखाक लेल हमरा सब प्रार्थना तक नहि कऽ सकैत छी । (दर्शक केँ) भला दिल्ली समाचारक अखिल भारतीय सूचीमे एकहु बेर अपना शहरक नाम आवल ?

क्यों एक मोटय : कियेक नै आवल ? एतऽ नय उद्योगपति लोकनिक सम्मेलन जे भेलए, तकर ?

साँवरिया : अरे नै यी भोड़मल जी ! हमरा लोकनि अपन परम प्रिय नेताक ओई बड़पदा लेल—महान नेताक ओई बड़पदा लेल प्रार्थना कयलहुँ ? कस्तहु ? नागरिक प्रार्थना ? सात समुद्र पार अमेरिका-इंग्लैंडसँ प्रार्थना सभाक समाचार पनायन आवि गेलैक...आ हमरा लोकनि....! हम पूछै छी, कस्तहु प्रार्थना नहि कऽ सकैत छी ? ठामहि बजरंगबशीए लोक मंदिरमे ? वा कस्तहु जाने ठाम ? इतिहास मापी देत ? कहियो ? ओ तऽ पॉलिटेक्स नहि छथि, तबक उदय होइक तकले लेल ओ अपनाकेँ होम करैत-करैत आइ एना छथि !

किछु बर्षक : हँ, हँ, करी । लगले प्रार्थना कैये ली । बहिक हमरा लोकनिक प्रार्थना अछि जे अपने कृपा कए एहि प्रार्थना-सभाक सभापति बनियो [बर्षक साँवरिया के कहैत छनि]

साँवरिया : [ओहि आग्रह के मोजर नहि बैत जकाँ] समय तँ ककरो बाट नहि देखैत छै । कस्तहु जे समयक निर्णय भऽ गेल आइ ? ई नखर शरीरे कस्तहु कालक कडर बनि गेल तँ प्रार्थना कोन काजक ?

किछु बर्षक : नहि-नहि । विस्मय कियेक ? जैये जाय । [पृष्ठभूमिसँ देव द्वारा एक स्वरमे गीता पाठ, एक स्वरमे बाइबिल, एक स्वरमे कुरानशरीफ, एक स्वरमे दुर्गा सप्तशती तथा एक स्वरमे हनुमान चालीसाक पाठ श्रुति । ओहीसँ स्वर उभरैत अछि जेना आकाश दिशतँ । बेसी लोकक चेहरा, अखि ऊपर बिस टाँगल जकाँ ।]

एक टा बृद्ध स्वर : (बुखताह परन्तु भारी) आह, प्रभो ! छहरदेवाली तँ चारु कात बनि गेल अछि, तकरा पर नोकनर-नोकनर काँचक टुकड़ी सभ सिमेंट बड कऽ मजबूत कऽ धँसेवाक योजना छल । पूनसँ चक-चक कऽ मन माफिक धीरथा सेहो कहाँ सकलहुँ । अगल-बगलमे करोड़न आ बुकिलिप्टसक

नव जातिक वाला सब रोपवाक छल । नहि रोपवा सकलहुं फूल-फल सब । प्रभा ! एहि दुखी आ' हताश समाज के, आस्था टूटल निराश समाज के एखन किछु वर्ष हमर सेवाक आर आवश्यकता छलैक । भगवान ! हम अंतिम समय मे गरीब समाजक किछु आर सेवा करऽ चाहैत छी, ईश्वर ! हम एहि समाजक वास्तविक नाँव पक्का कए कऽ ई शरीर त्यागऽ चाहैत छी ।...

पहिल युवक : (बीचहि मे) पाबक नहि बनू । बहुत दिनसँ ई शहर निराहार अछि ।

दोसर युवक : एकरा बेहू पर एक बीत बरस नहि, एकर अंग-अंग जखार अछि ।

तेसर युवक : वसू जे ई शहर सुखायल गंवाक छार अछि ।

पहिल युवक : नहयशा योग्य नहि ।

दोसर युवक : पीबाक योग्य नहि ।

तेसर युवक : गरम कि धान किछु उपजवशा योग्य नहि ।

एकटा बर्षक : (किछु आगाँ बढ़ैत) अहाँ लोकनिक परिषद विश्वार्थी ! बोली बड़ साफ अछि ? कोन आश्रम छी ? नीक बाजि लैत छी ।

पहिल युवक : जी हँ । हमरा लोकनि पूर्व जन्मक पूर्वहि जन्मसँ नेता-मित्रीक वृत्ति करैत आबि रहल छी । हमरा लोकनिक एक-एक जन्म पाँच वर्षक होइत अछि । कतेक जन्म भेलै, जोड़ि लेल जाओ । पूर्वहु जन्मक पूर्व जन्म सँ हमरा नस-नसमे नेताक वास अछि । बस एतवे वृत्ति लेल जाओ जे हमर ई शरीर नहि, पुरा विधापक-मिवात अछि ।

दोसर युवक : सत्य के सूगा अहाँ पोसि कऽ, ओकरा द्वारा गवहाक बोली मे लोक सब के प्रक्षिप्त करवाक हमरा लोकनिक खानदानी पेशा अछि ।

तेसर युवक : (ओहि बर्षककेँ पछैत) छोड़ू ! अछि कोनो कारवार आ कि कोनो सत्य अहाँ सन ? तऽ बियऽ । पुरात ओकरा

सूगा बना बैत छी । गवहाक मुँहे नैतिक आचरण पढ़ा कऽ सेवा बैत छी मिनटे भरिमे । (खुदकी बजबैत अछि मसारी सब बला । ओकर एहि प्रस्ताव पर बुनू लोक अपन-अपन बगली हथौडये । फेर निश्चिन्त भऽ जाइत अछि आ' पहिल लोक बजैत छैक)

पहिल लोक : रच्छ रहल ! हमर सत्य पहिनहि सूगा बनि गेल ।

दोसर लोक : आ हमर सत्य धाकि हारि कऽ निसभेर मृति गेल ।

पहिल युवक : [बीचहिमे जेना पूछैत छैक] भाय साहब पड़ीमे कते बाजि गेल ? [जेना सभ जयवा खेल, अपना अपनी कऽ उछत भऽ उठैमे एक आध चलवाक उपक्रम करैत अछि । दोसर लोक बुधिमारीक संग ओतऽ तँ चलि जाइत छैक]

पहिल लोक : हाँ, हाँ ! किएक जा रहल छी भायजी ? देश-वशा पर एक रस्ती विचार केने जाउ । भारतेन्दु बाबू.... शिवीपट्टी बला नहि, काशीक भारतेन्दु बाबू हिंदी-कवि, कहि गेल छनि [सरवर]

आबहु सब मिलि रोवहु भारत भाई,

हा हा, भारत दुर्दशा न देखी जाई ।

[वृष्णभूमि सँ जेना कफरो अति आतं भऽ कऽ कनकाक स्वर सुनाइ पड़ैत छैक । आ पहिल लोक बोहरबैत छैक]

हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई

आबहु सब मिलि रोवहु

दोसर लोक : [किंचित बेस परिवर्तनक संग प्रवेश करैत कहैत छैक] तँ कानऽ लागू जोर-जोर सँ, छाती पीठि-पीठि कऽ कानऽ लागू जे जनता के बूझल भऽ जाइ, भारत दुर्दशा मे अछि आ तखन फेर जनता सेहो हेज बना-बना कऽ हाफोस करऽ लागव जे हा हा भारत दुर्दशा....

पहिल लोक : तऽ की हम गलती कहि रहल छी जे भारत दुर्दशामे अछि ?

दोसर लोक : हे पब्लिक के भोलियवियो नहि । कहि दैत छी । भ्रम नहि पसार लोकक मनमे । जन छियै भ्रम पसारव सेहो दंडनीय अपराध होइत छैक ?

पहिल लोक : एहिमे भ्रम पसारवाक कोन गण उठा देखियै अहाँ ?

दोसर लोक : तँ अहाँ हाथमे हरिवंशक पोथी उठा कऽ कहू तँ जे ई कविता, भारतक दुर्दशा बला गप्प भारतेन्दु कवि अंगरेज बहादुर सँ जे देश तवाह छल ताहिपर लिखने आ छपीने रहथि कि नहि ? अखन कि आव ककरो सँ ई गप्प नुकासल छैक जे अंगरेजवा सब अहाँके स्वतन्त्रताक मुकुट पहिरा कऽ अनमन तहिना चल गेल एतऽतँ, जेना कोनो महन्ध रामलीलामे हनुमानकेँ मुकुट पहिरा कऽ मंचपर सँ चलि जाइए ! अंगरेज तँ अपना देश कहिया ने बुरि गेल खंडन । कतऽ सूतल रहै छी यो महाशय ?

पहिल लोक : के हम कि अहाँ ? सूतल के छल, कि अछि ? की सरी चलि गेल अंगरेज एतऽ सँ ? [हँसी करैत जकाँ] आ कि, भारतक दुर्दशा कि अंगरेज सब कऽ कऽ गेलैए ? उठावक हरिवंश ? अहाँ कहू तँ एतेक-एतेक वर्षक बास्ते ओ कि बोकक हिसाबसँ दुर्दशा कऽ कऽ चलि गेलै ? बृद्धि पड़ेये जेना दुर्दशा उत्पादनक बढ़का-बड़का कल-कारखाना बसा कऽ चलि गेलै ओ सब ।

दोसर लोक : [तोषैत जकाँ] हँ यी ! आ आव एहि दुर्दशाक हमरा लोकनि स्वयं अपने जिम्मेदार छी ।

पहिल लोक : मुदा अंगरेज लोकनि जे अपन किछु गखा-सम्ताम छोड़ि गेल छथि एतऽ । ओ लोकनि आव अपन अपन केस के कारी करवा कऽ आँखिक पुतरी के कारी बनवाकऽ आइ हमरा सभक दुर्दशा नहि करवा रहल छथि । बेचारी जनता जे लूच्छे हिन्दी या देसी भाषा माख जनैये, एको रस्ती बूझि पावि रहल अछि अपन दुर्दशा ? अपना पर

होइत एहेन-एहेन बिपत्ति, तकलीफ आ अत्याचार ? दुर्दशा ?

दोसर लोक : [खोसाइत जमे] दुर्दशाक अर्थ की होइत छैक ? की माने दुर्दशाक ? जे मन भेल, एक टा कोनो शय्य लीख लेलहुँ आ खमलहुँ घोसऽ—दुर्दशा ? बुझिथक कोनो जबाब छैक ? [जेना पहिल लोक के आँखि सँ तोलैत] एखवार पढ़ैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । रेडियो सुनैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । फिल्म देखैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । तखन तँ कनबे करब—हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई । इएह परिस्थिति अछि । सूचना आ जन-संचारक सब टा उपलब्ध साधन, तकरा सभसँ कटि कऽ रहब अन्हरी भावक अलग बधान बनल आ' समय अयनापर एहिना शुद्ध-साद जनता के मति मारि कऽ ओकर बाट भोलियवैत रहब । कहियो सोचबाक कष्ट करैत छियै जे अहाँ लोकनि जनतामे कतेक भ्रमजाली पसारैत छियै ? दुर्दशा ! हुँह । अरे दुर्दशा छै तऽ बन्द कऽ लियऽ, के रोकीये ? दुर्दशा....

पहिल लोक : की भ्रमजाली यी ? की ? दुर्दशा नहि छैक ।

दोसर लोक : दुर्दशा छैक तँ बदलि ने लियऽ । दुर्दशा-दुर्दशा चिचियाइत रहने तँ नहि हुएत । इएह हालति अछि अहाँ सभ सन पहिल लिखल संग देखाइत लोक सभक, एहेन अबंड गैर जिम्मेदार लोक....

पहिल लोक : गैर जिम्मेदार नै बेरोजगार कहियो बेरोजगार । सत्यता के कियेक बदलि दैत छियै ? सरकारी लोकरीक लेल

बयस समान्त। आव आमिलक क्षीर मे मरल माल
जका फूलवे हमरा सभक भविष्य....

दोसर लोक : भन्नु । 'राष्ट्रीय प्रगति आ' उदयानक विषयमे किंचितो
सामान्य ज्ञान नहि अछि अहाँके । धिक्कार ! कतेक
लज्जाक बात ? सामान्य ज्ञानक एहन अभाव ?

क्यो एक गोटय : अपने ज्ञान बाँटल कि आव ?

दोसर लोक : हँ यो । धिक्कार, जखन कि जन-जन के सामान्य ज्ञान
देवाक बास्ते सभटा सिनेमा हालमे बढ़िया फोटो देखयवाक
एतेक सुन्दर व्यवस्था कएल गेल छैक । प्रगतिक, आ
धरिक सभटा उपलब्धिक समाचार-वितरण, विलक्षण फोटो
सब नित्य दिन देखयवाक सरकारी प्रबन्ध फिट कएल
गेल छैक । कोनहु सिनेमा हाल मे तीन बज्जीसँ लड भी
बज्जी, कोनो सिनेमा मे जाये बटुयवाक व्योले कएल
गेलैक अछि । 'सभ टा प्रातिकारी विकास-कार्यक एक
सँ एक आकर्षक फोटो सब... जनताकेँ ज्ञान बढ़यवामे कतेक
खर्चा छैक सरकारके प्रतिदिन... ? कोर एतेक रास अखबार
सब....

पहिल लोक : [अवोध जिज्ञासाक स्वर] एँ यो, ओ जे सिनेमा सबमे
जे बड़का-बड़का हरिप्र-वीयर सभका सब देखाओल
जाइत छैक आ तहिपर एक टा हथकड़ा छड़ी से घुमैत
रहैत छैक आ पाली सँ गुरीनगर पहुँचै कोनो छोड़ी
रचि-रचि कड बसैत रहैत छैक जे फर्ला बान्ह बग्हा गेल
आब... जकर उद्घाटन विभाई मंत्री...

दोसर लोक : [आह्लासित होइत] विलकुल ? विलकुल । वैह ।

पहिल लोक : वैह सब ने ? जाहिमे कए-कए मोनक पट्टा अपना
आपना गीठ पर लदने ठेढ़न पर नाक रगड़ैत जकाँ
घामे पसीने नहायल सैकाइक सैकाइ मजूर सब माल
गाड़ीक सैकड़ी डिब्बामे मोड़ा सब लदैत रहैत छैक आ
देखि-देखि कड मोने मोन बड़ हँसित होइत रहैये जे आव

अपना देशमे एतेक-एतेक चाउर-सड़भ-उपजल लागल ?
बाह दे बाह ! एतेक रास अन्न ! अपना देशमे ?

दोसर लोक : हँ हँ । वैह फिल्म....

पहिल लोक : भाय साहेब जी, से ई भरलो मावपाड़ी कतऽ पहुँचावऽ
जाइत छैक सब टा अन्न ? कोन गाम कऽ ? [सबके देखैत
घुमैत]

क्यो एक गोटय : जानता बैयनाथ ! हमरा नहि बुझल अछि । (कहैत ओ
पहिले दोसर लोक केर आनके देखैत छैक एहि आवासी जे
कतहु ओकरा सब मे केकरो-बुझल होइक)

क्यो दोसर गोटय : जनी मन्पत, हमरो नहि बुझल अछि हम तँ काहिहू
चाँसमे दोकान पड़ीने रहियै तँ कोटापला गहुँसके जे
इम मास का राशन नहीं आया है ।

क्यो एक गोटय : बाह-बाह ! पहिलो मात तँ सँह कहिकऽ घुरीने छलियै —
इस मास का राशन....

दोसर लोक : [खोंखाइत जकाँ] बस धऽ लेनी एकटा गीड़ह । ओ
मावपाड़ीक सब टा अन्न देसमे रहैत छैक कि कोनो
धरमे दहा देल जाइत छैक ? एतना सोचवाक
बिबेक नहि ?

क्यो एक गोटय : भाय साहेब, कोन जिलामे छै से देश ?

दोसर लोक : ओ बूढ़ि, देश ! देश ! हुँह ! हिमका लेखे जिलामे
देश होइत छनि ! एकटा देशमे अतंध्य जिला होइत
छैक । सभटा देशे छैक ।

क्यो दोसर गोटय : तखन तऽ हमरो गाम देसमे भेलै ?

क्यो एक गोटय : कोन गाम रहैत छी ? माने जे धिक्कारा कन्स्टीच्यूप्ली ने
पड़ियै ?

क्यो दोसर गोटय : (उदायल जकाँ) भरितक जखनत ठाकुरक....

क्यो एक गोटय : देशसँ बाहर अछि ।

क्यो दोसर गोटय : से कियेक ?

क्यों एक गोटेय : देखारे बीच-बीचि कऽ एसेल्ले टा छथि । कम से कम मंत्री रहल तकरे नाम टा बेचमे भितहा कएल जाइत छैक ।

क्यों दोसर गोटेय : तखन ?

क्यों एक गोटेय : इएह भाइ साहेब कहताह । [दोसर लोक से पुछैत]
भाय साहेब एतेक रास मालगाड़ीक डिब्बा सब, चाउर गहुमसे कतक वास्ते कसाइत छैक ?

दोसर लोक : अहाँ लोकनि माँझ कपार बला व्यक्ति बुझा रहल छी ।
सुच्छे अग्ने टा होइत छैक जीवनक लेल ? इनारक बेग मच ।

पहिल लोक : तखन बाकीक लेल आर ?

दोसर लोक : कल कारखानाक लेल बड़का - बड़का विशाल प्रोजेक्ट तब...परमाणु ऊर्जाक प्रोजेक्ट....तखन यूरेनियम उपजयवाक भारी प्रोजेक्ट....

पहिल लोक : परमाणु ऊर्जा आ यूरेनियम की होइत छैक भाय साहेब ?
उपजा बड़द पै वास्ते खेतमे जे मुरिया खाद जकाँ देल जाइत छैक सैह की ? ई यूरेनियम की होइत छैक ?

दोसर लोक : ले । बच्च धुड़ि छऽ ही । यूरेनियम की होइत छैक ?
[बाक कात भरमनापूर्वक देखैत फेर पहिल लोक पर केन्द्रित होइत] यूरेनियम खाद होइत छैक ? हूह !
[पुनः सबके देखैत, दर्शके मे से कफरो सम्बोधित करैत जकाँ]
विशाल एतेक उत्तति कऽ गेल । इएह देखल जाओ जे चन्द्रमा-सूरज पर चढ़ि गेल । आ तोरा एतयो नहि बुझल छऽ जे यूरेनियम की होइत छैक ? धिक्कार कहवाक चाही !

पहिल लोक : एहिमे धिक्कारे किएक छी यी ? नहि बुझल अछि तेँ पुछैत छी । बुझा दिअऽ ।

दोसर लोक : [ओकरा पर कृपापूर्ण मजरि देत वर्शक केँ कहैत छैक]

भाय साहेब लोकनि, अग्ने लोकनि मे से एतऽ क्यों खोजल विज्ञानक विज्ञान छी ? [फेर केना तरकाल अपन मसली गुधारैत] अरे, माफ करव । भला विज्ञान, एहि चौबटिया पर की कऽ ओताह ? ओ तेँ अपना डाइंग—खम्भे मगर विज्ञान पर समयसमये ओंगठल अणुका एखवार पड़ि रहल हेताह । वा संभव जे शहरतेँ बाहर गेल होथि कोनो पीएच० डी० डी० लिटक भाइभा लेबऽ निवेन्द्रम वा विमनी - विदेश मंत्रालयमे विदेश यात्राक मोड़ी बैसबऽ । [खंखर सेँ] भला एहि अवश्य भीड़ भाइका चौबटिया पर विज्ञान की कऽ ओताह ?

पहिल लोक : से की भाय साहेब ? केहन मोड़ी यी ?

दोसर लोक : हँ यी भाख मोड़ी छैक । कोनो एक टा ? [अधिकांश] एहि चौबटिया पर असभव भीड़-भाड़मे ओ किएक ओताह ? [किंचित चिन्ता करैत] दोसर जे, एहि भीड़-भाड़ मे पाकेट भार आ डचकको लोक सब तेँ रहैत छैक । चौबट्टी तेँ तकरे लोकनिक ।

क्यों एक गोटेय : (क्रोध सेँ) हँ यी हमरा लोकनि असभव छी, डचकका छी, जे क्यों एहि चौबटिया पर ठाढ़ छी ?

दोसर लोक : (अपन घात जोड़ैत) कियेक ओताह ओ एहि चौबट्टी पर, जतऽ सब छैक खोमचा खाला, रिक्शाबन्दा, छोटाछिन शेकानदार, पैदल लोक वा अपना ऑफिससेँ घुरैत किरानी मुंशी लोक वा कोनो इन्टरव्यूसेँ निराश हलाश घुरैत कोनो बेरोजगार एकमर मौजवान ।

क्यों एक गोटेय : (गारि पड़वाक मुद्रासे) आर की ? चौबटिया कोनो जगह थिक भलमानुष लोकनिक लेल ? कइली गेलए जे 'ओ नर नहि बिचारि थिक, जे चौबटिया वाय जोआ मलिङ्गा छोड़ि कऽ शिरली मुरही खाय... ..' (गर्वत कहैत छैक)

बोस्टर लोक : उचित ! एतः किछु जे जयवाहू महान आ विद्वान लोक ? (फेर किछु सोचैत जकाँ, मन पाईत) हूँ भाय माहेव लोकनि, तँ छी क्यों मोटय साइन्सक लोक जे एखन महान विद्वान नहि भेट होइ आ' यूरेनियमक विषयमे किछु ज्ञानक गप्प बुझा सकी, ? क्यों भाय ? क्यों बाप-पिती ककान्ददा क्यों ? यूरेनियम ...

चारिम युवक : (अचानक जोर सँ) हे इएह हम बुझा दैत छी । (ओ आगाँ बढ़ि कऽ अघैत छैक) ई एखन धरि प्राप्त ऊर्जा पर्यायमे सबसँ महान अछि । एकर प्रयोग समस्त मनुष्यताक खिलाफ कएल जाय तना अछि । यूरेनियमऽ राजनैतिक व्यवहार कएल जायत । यूरेनियम अवैधता मनुष्यक सब धिक । (कहैत कहैत युवक अपन माय घऽ लैए आ अभावत जकाँ ओतहि चैत लगेए किछु मोटे ओकरा पकड़ैत-सम्हारैत पूछऽ लगैत छथि—की भेल की भेल ? मुदा ओ युवक अचेत जकाँ भ' जाइत छैक । काहूँ पर सँ ओकर शोर सारि जाइत छैक आ जकरा, ओकरे सेवामे जायत एक मोटय, बड़ चलाकी सँ लऽकऽ एम्हूर-ओम्हूर बेखेत तसरि जाइत छैक आ परिचित पोशाकमे धोती-कुतमि उपस्थित होइत छैक ।)

साँवरिया : चिन्ता धुनि करऽ । नै घबड़ा ! तोरा किछु नहि भेलऽ हे । तोरा किछु नहि भेलऽ ...

पहिल लोक : विचित्रे गप्प की महाशय ! ई युवक ओषड़ाकऽ साटिपर खति पड़लैए । अचेत छैक आ अहाँ परमा रहल छी जे किछु नै भेलैए । फमाइ !

साँवरिया : अहूँ अजेरे पबराइत छी । एकरा सरो किछु नहि भेलैए । ई यूरेनियमक विषयमे वर्जित-वर्जित उपोक्त्यामे आविष्कार छनि पड़लए । एकरा आर किछु नहि भेलैए ।

चारिम युवक : (अचानक बाजऽ लगैत छैक) हूँ हूँ, यूरेनियमक विषयमे । हम टीका-टीका जबाब देने छलियँक । इन्टरव्यूसँ निकलि कऽ सबसँ पहिल काज हम इएह कयली । यूरेनियमक

तकनी । आ' जे कि तख छैक अमेरिकामे सबसँ बेसी भेटल । हमर जबाब एकदम ठीक छल । (ओ हकमेत जकाँ छैक)

साँवरिया : की जबाब ठीक छल ? कोन खालक जबाब ?

चारिम युवक : तब टा प्रश्नक उत्तर ठीक छल हमर । मुदा ओ विद्वान सब हमरा दूतकारलक, हमर आत्मबल के तोड़ि कऽ घऽ देखक । कहलक धिक्कार ! एम० एस सी० कऽ चुकल छी अहाँ, काहिहूँ कीयो कावेजमे हजारक हजार विशाधी बराबब प्रोफेसर बनब । विशाधी के की बराबबे खाक-बाबर ।

क्यों एक मोटय : पड़ायब कि बराबब—की ? विद्वान साहेब की पुछलनि चरायब ?

चारिम युवक : (पाव करैत जकाँ अभय सँ बाबब बोहरसैत) एहि देशमे जतऽ एम० एस सी० लोकक ज्ञानक ई स्तर अछि जे ई यूरेनियमक उपयोग नहि जनेत छथि, जे बुझा सकैत छथि । रुस आ जापानमे छोड़ा-माँड़े पर्यन्त छोट-मोट आविष्कार कऽ लैत छैक ।

पहिल युवक : अहाँ नहि पुछलियनि जे तबू अपने एखन धरि कए दा आविष्कार कऽ चुकलियँक ?

बोस्टर लोक : इएह धिक शिक्षाक स्तर (क्षुब्ध होइत) कतेक अवगतन भऽ गेलैक छल सोचानिक ? अरे एको टा पढ़ि-लिखि कऽ परीक्षा पास करै तखन नै । ओरि आ पैरवी !

चारिम युवक : (जेना सतर्क होइत) एँ यो, यहाँ कि ओही इन्टरव्यू बोर्ड सँ आवि रहल छी ? अहाँ पुछने रह्यो ई गप्प सब ? (ओ खूब उत्तेजित भऽ कऽ ओकरा विस वडैत छैक आ बाजऽ लगैत छैक) आ यदि अहाँक ओहि पदमासीक अवला एहि बीचही पर लेबऽ लागी ? पढ़िक कऽ करेजपर चढ़ि जाइ आ जोरसँ हुमचि दी तऽ क्यों कानहु चला हएत एतऽ ? (जोरसँ) हमर ठीक रही उत्तर के गलती कियेक केवऽ तों s s s ?

क्यों एक मोठय : कियेक तँ आइ कारिह इन्टरव्यूमे सही उत्तर देव मस्त बात छैक ।

चारिम युवक : (बिना सुनबहि ओकरा कहने जाइत) नरेदी छऽ कऽ मोकि दियऽ ? यूरेनियमक उत्पादन सरि संसारमे सबसे बेसी अमेरिका नी करिये ? (बर्षक के जेना चिन्ताई बुझबैत) अपने विस्वास कर, हम मत्त कहैत छी जे अमेरिका एहि विषयमे बड़ खतरनाक इरादा रखैए । (दोसर लोक के पुछैत) अहाँ कियेक कहलियैक कस ! कियेक कहलहुँ हमर ठीक जवाब के ?

दोसर लोक : (स्थिर रहैत) आव लियऽ । ओ अंधु हम कतऽ सँ एली इन्टरव्यू बोर्डमे ? आ भला हम अहाँ सँ कियेक किछु पूछब ? हम तँ मात्र एहि द्वारे कहली जे अहाँ अपना के इन्टरव्यू बोर्डक विज्ञान लोकनिक सोझ नहि, किछु पैस दांत आ मोकगर नह बला जागवर सभाक बीच घेरलान अनुभव कयने हुएब । ओतऽ ओ लोकनि अपन कुल मोवक उम्मेदवार के छोड़ि आम सभ पर मुकदातीक गुगगर बुझि हुका लेबऽ नगीत हेताह आ' बेजजति कऽ कऽ घुरा ई मे लागल रहल हेताह । अपना लोक के छोड़ि कऽ सभ के....

पहिल युवक : हँ हँ ! हल्ला छलैक जे ओहिमे बेयरमैवक अपने साङ्क बेटा सेहो उम्मेदवार छलैत । तकरे होयवाक छलैक । तँ बुढ़ा आन सब उम्मेदवार पर बताह बातर जकाँ खूबूआ-खूबूआ छुटै छलैए । सबके राजन गजल-कऽकऽ घऽ देलकै ।

दोसर लोक : तँ तऽ कहाँ हमरा पर तमसबवाक प्रयोजन नहि यी ! ओही इन्टरव्यूसँ पुरतछरे कए टा भाव कए बेर ई तय कहलनि हमरा.... आहो ! ओही आव पाँच वर्षसँ बेरोजगार अछि । आ एहि वर्ष छव्वीस जनवरी कऽ ओकर सरकारी नोकरीक वास्ते उमेर सेहो खतम छै । सरकारी नोकरीक रस्ता बन्द ।

पहिल युवक : २६ जनवरीए कऽ उगार खाम ! चल् बड़ दिव । मोक्ष तँ अवश्य भेटतै आव । पुष्प तिथिमे मरला छतर मोक्ष धएले रहैत छैक । शास्त्र कहैए ।

दोसर लोक : भुरभु नहि यी । सरकारी नोकरी पदवाक बयस खतम होयवाक विधि । आ ताहु पर तोँ तँ जनिते छहुक जे ऐन २६ जनवरी कऽ अन्य बेनिहार अपना देशक थोतो लोक के जखन सरकारे नोकरी नहि दऽ सकय तँ ई बड़का— बड़का विशाल लोहा फँसरी या कपड़ान्तेलक फारजाना बना राख कियेक बेतैक ?

(उत्तेजित युवक जेना डोल पड़ि गेल । जेना अफसोस करऽ लागल । ओकर मुँह लटक गेलैक फेर तत्क्षण ओ अचानक साथ उडीलक आ उपस्थित जन-साधारण के चेतबऽ लगलैक)

चारिम युवक : ई यूरेनियम ! देखबै एकर नर संहारी विध्वंसकारी कृत्य सब ! करामाति !

पहिल लोक : की करामाति ? (चिन्तित स्वरमे)

चारिम युवक : देखबैक जे । हम फेरो कहि बैत छी ई यूरेनियम बहुत खतरनाक विस्फोटकारी ऊर्जा बिक । एकर जे जतेक जोगाड़ कएल जा रहल छैक से सब टा भयानक युद्धक औजार आ शक्तिशाल वास्ते कएल जा रहल छैक ।

दोसर युवक : मुदा ओ लोकनि तँ कहैत छथिन जे ई मानवीय विकास आ' समृद्धिक बड़ धन्यवाक एक टा महान ऊर्जा बिक जाहिसँ मनुष्यक प्रगतिक डेग आओर आगाँ बढ़ैयला छैक ।

चारिम युवक : हँ हँ ! कहवा-भुनबाये तँ ई एखन सँह । तँ लगत छैक पबिस आ शुद्ध । मुदा ई केहन खतरनाक उद्देश्यक उपज बिक, ठीकर करामाति तँ....

पहिल लोक : (चिन्ता आ उद्देश्य) रे भाय, कहबी त करब जे की करामाति ?

दोसर लोक : की करामाति ? अहूँ भाय साहेब कमाले छी । अरे ई युवक एखन उभेरक जोशमे छथि । अज्ञान छथि । नहि बुझैत छथिन जे अपना देशमे एकर एहन प्रयोग असंभव छैक ।

चारिम युवक : (जोश सँ) क्येक ?

दोसर लोक : कियेक तँ अपने राष्ट्रीय नीतिक खिलाफ छैक ई बात । हमरा लोकनिक सिद्धान्त विश्व बंधुत्वक अछि जेकर रास्ता सत्य आ अहिंसाक छैक । अपनहि जनताक विरुद्ध कतहु होइक एकर प्रयोग ? अपना बुद्धिमत्क खिलाफ तँ हमरा लोकनि कारवाइ करबे नै करैत छियैक, अहाँ लोकनिके तँ बुझैत अछि...आ अपने लोक पर कतहु....

चारिम युवक : (ओकरा तीक्ष्णता सँ देखैत) एकर शक्ति हमरा सब दिस नहि मोड़ल जयतैक ? भविष्यमे ? हमरे लोकनि एकर शिकार नहि बनायल जायव ?

दोसर लोक : कथनपि नहि । ते कदापि नहि भऽ सकैए ।

चारिम युवक : ठगऽ छुनि । सएह हेतैक ।

दोसर लोक : तो नहि बुझि रहल छहुक युवक । ई बतवा वामी होइत छैक आतमे उपयोगी सेहो । काल्हक मनुबख, बिना एकरे सुरक्षित नहि रहि सकत ।

पहिल लोक : कोना ?

दोसर लोक : एना, जे देखियौ, आइ अमेरिका लग ई सबसे बेसी मात्रामे छैक । ओ अपन सामान सबसे भंडार भरने जा रहल अछि । ओकर देशक सीमाभे जनता पर कहिको कोनो विपत्ति नहि पड़तैक ।

पहिल लोक : भाय साहेब ई कहु जे जखन ओ एहन अस्सी बीज छैक तँ अपना कतऽ कियेक नहि अछि ?

दोसर लोक : अछि कोना नहि ? किछु खराबमे भेटल-ए किछु दुनियाक बैकमे कर्जा रूपमे । मुदा देशक किछु आन्तरिक मुद्दा बना बिस्तक लोकनि एकर उम्मेद अर्थ नगर्बत छथि । आदित्य

छनि उन्टा मोचवाक उन्टा नरक्षाक । एहि कथनकेँ 'भीख' कहैत छथिन ! यद्यपि कि एहि कथनक लेल देश बहु पैस मूल्य चुका रहल अछि । जे हो ! विरोधी मतकेँ सेहो अवसर स्वाभाविक, अपना कतऽ बहु प्राचीन अछि । तेँ विरोधी मतक सेहो स्वागत ।

एवो एक गोटय : अपने भाषण-प्रोजेक्टक डाइरेक्टर वृथाइत छी....

दोसर लोक : अहाँ लोकनि के बुझलै हएत जे आव एक टा विशाल प्रोजेक्ट बनल अछि । ततैक पैस ततैक पैस जे ओकरा ओइक सम्पूर्ण एमिशनमे ...

पहिल लोक : त की मय भगतैक ओहि कारखानामे ?

चारिम युवक : बड़का-बड़का विस्फोटक औजार ! मनुबखकेँ भुजि कऽ रखै बला बड़का-बड़का खार्च । इएह सब ।

दोसर लोक : नहि यी ! ऊर्जाक एहन विराट स्रोत केँ ई युवक विध्वंसकारी कारखाना कहि कऽ बुझा रहल छथि । ई अहाँ लोकनिकेँ मनमे राखि रहल छथि । झूठ कहैत छथि ।

चारिम युवक : झूठ अहाँ बाजि रहल छी । हम लोककेँ डीक-डीक बूझा रहल छियैक । एखन देश केँ एकर पहिल जल्दयति नहि छैक !

दोसर लोक : देश पर अनेक प्रकारक चीतरका मंकट....

चारिम युवक : हएह तँ थिक चलाकी ! एहि विस्फोटक योजनाक पक्षमे मुद्दे ई प्रचार आ' तर्क कएल जाइत अछि जे देश पर कोनो खतरा नहि आवय आ' यदि आवियो जाय तँ देशक, देशक महान जनताक रक्षा कएल जा सकय ।

पहिल लोक : (किंचित उग्रमूल) केहन खतरा ? कतऽ खँ के करतैक खतरा ?

दोसर लोक : आर के ? एहि दिसमें चीन, ओम्हुरतँ नेपाल कऽ सकैए आ' ओहि कात सँ पाकिस्तान....

चारिम युवक : ई हँ । चीन, नेपाल आ' पाकिस्तान ! हम पुछैत छी (तीनू दिस दर्शककेँ पुछैत) अहाँ लोकनिकेँ अछि खबर ?

क्यों एक मोटव : जखन कि सत्य बात में है थिक जे एहि चीनू पड़ोसी देशमें हमरा लोकनिक सम्बन्ध पारिवर्तिक बनि रहलए । अगिला किछु दिनमें हमरा लोकनि एक दोसरा कतऽ बियाह दुरामन आ' छठियार मूइनमे चीन नेपाल, पाकिस्तान गेल आवल करब । सोहर पर्व जायब मिलि जुलि कऽ नेपाल चीन पाकिस्तानमे बयन तिहार चलत ।

चारिम युवक : जखन कि अही लोकनि के अछि पता जे कतेक राम चीन नेपाल आ पाकिस्तान अहीक आस-पड़ोसमे मुकायल अछि अगले बगलेमे ?

क्यों एक मोटव : हमरो लग ? हमरो पड़ोसमे यी ? (चितित जकां)

चारिम युवक : (गंभीर चेतौलक स्वरमे) हँ ! हम केर कहि दैत छी जे ई तमाम बम बन्दूक तैयार चाहे चाहि देशमे भऽ रहल हो दुनियामे चाहे कतहु भऽ रहल हो, अहूँक छाती आ' गर्दन धिस जलि सकैय । किएक तँ जखनहि अहाँ हिनकर मन माझिक नहि रहलियनि कि हिनका नजरिमे अहूँ कखनो चीन आ' कखनो पाकिस्तान जकां भऽ जयबनि जे कि अहाँ अपना अधिकार लेल ठाढ़ हएब । किएक तँ ते हिनकर स्वार्थक विरुद्ध हित-अधिकार लेल अहूँक ठाढ़ ठाढ़ हएब ।

बोमर लोक : केहन भड़काइ गण करै छऽ हो भाय ? ई सभ टा सभ किछु अपना देशवातियेक धारैत लै छैक ! अपन देश धन्य अछि । संदेह जुनि करऽ ! संशय आरम्भक नाश करैत छैक अहाँ हा ! अपन देश ! (आ' मुग्ध हँसत आँखि मुनित बुनू हाथ जोड़ि कपार पर रखैत कहैत छैक) अपन देश ! हमरा लोकनि के एकर सभ टा रति विधि केँ श्रद्धा देखबाक चाही ! संशय नहि ! संशयात्मा विनश्यन्ति ...

क्यों एक मोटव : कोनो रति विधि पर संशय नहि करबाक चाही ! आ' बुझबरी आ' निश्चयनिरीह अनुसूख सब पर होइत

बंदूक आ' गोलाबारी के फूल बेतपात खड़ा कऽ आरती करबाक चाही, यी महानुभाव ?

बोमर लोक : (नहि मुनित सब क्रमे) अपना नेताने श्रद्धा आ' बटुइ विश्वास राखी । आ' नितान्त निःस्वार्थ भावसे आँखि मूनि कऽ समाज-सेवा करैत जीवन धन्य धन्य करैत रही । ई नश्वर आ' अकिंचन देह आ' प्राण समाज-सेवा करैत देशक पलिवेदी पर अहित कऽ दी । ई ऊर्जा लै लेहो, कल कारखाना सेहो तँ हमरे लोकनिक धारैत थिक ।

चारिम युवक : हँ, हँ किएक नहि ! एही कारखानासँ ने आर्थिक मोकाबिला कएल जयतेक ।

पहिल लोक : कभीक मोकाबिला ?

चारिम युवक : (स्फोषसे) आक्रमणकारी शत्रु सभसँ । जखन कि हमरा सभकेँ बाइ धरि कबो ई नहि कहलक जे आक्रमणकारी केँ होइत छैक ?

पहिल लोक : ई आक्रमणकारी केँ होइत छैक हो भाय ? आ एहि बात सँ ओकर कोन सम्बन्ध छैक ?

चारिम युवक : कहलहुँ नहि, बाहरी दुश्मन जखन देशक सीमा पर हमला करत साने आक्रमण, तँ एहि कारखानाक बनल लड़ाइक आँजार सबकेँ लेस हमरा सेना ओकरा खेड़ाड़ि कऽ सीमा सँ बाहर कऽ देतैक ।

पहिल लोक : मूढ़ा जेना कि अहाँ लोकनिक गप सभमें मतलब बहुराहत अछि "यदि बाहरसँ ओ देश सब हमरा सब केँ घेर लिअय आ' एम्हर पाछाँसे अपने देशक चीनी नेपाली पाकिस्तान गोलाबारी कऽ कऽ हमरा सब केँ भुजि कऽ राखि दिअय तखन ? की करब ?

चारिम युवक : हँ भायबी, अहाँ विश्कुल छीक बुझि रहल छीक । एहनो भऽ सकै-ए ! बलिक इएह हएब ।

पहिल लोक : (चितित) तखन हमरा की करबाक चाही ?

दोसर लोक : धैर्य आ' धामिनस' काज लेवाक चाही, लड़ाई सगड़ा नहि करवाक चाही ।

पहिल लोक : ककरा स' ? लड़ाई-सगड़ा ककरास' नहि करवाक चाही ?

दोसर लोक : (बुझबैक मुद्रामे) ओकिरमे काज करैत होइ तँ अपना हाकिम सभस' । गाममे रहैत होइ तँ मुखिया सरपंच आ बी० डी० ओ० स', अपना क्षेत्रक नेता अर्थात् एमेल्ले एम्पीस' ।

पहिल लोक : मुदा ई लोकनिसें हमरा सभक अपने लोक छथि । ई सब चीन, पाकिस्तान रूस वा अमेरिकाक लोक सऽ नहि छथि अपन समस्या वा तकलीफ कथा हमरा सब हिनका लोकनिके नहि कहबनि तँ ककरा रहबैक ? ई तँ अपन लोक....

चारिम युवक : [तीक्ष्णतासँ] के कहि देलक अपन लोक ? ई सब अगदसी बाहरी लोक छथि । हिनकर मूल गोल, पूर्वजन्म—विदेश मे छनि । [सोचैत जकाँ] मुदा अही अपन दुःख विपत्ति हिनका लोकनि के अवश्ये सुनबिबनु । ई मुनितहि आयल छथि । सुनताह । फेर सुनताह । खाली सुनबिबनु । लड़, जुनि । हिनका लोकनिसँ लड़ाई नहि कर । हमरा लोकनिक [हाथ उठा कऽ जोड़ैत आँखि मुनैत] भाग्य विधाता छथि । हिनकासँ सगड़ा नहि करी ! [स्वंगसँ] ।

पहिल लोक : बाह, लड़ी कियेक नहि यी ? जखन हमर मुख सुभीलाक हस्तजाम करब हिनकर काज छिथनि तँ ई छुछे दुःख सुनताह ? दुःख कि कोनो बाइ जीक भोजरा छैक आकि दरबारी वात नटबाक तिरहुत, से मुनथि आ पान मसोडमे मुनि-मुनि कऽ भूमथि ।

चारिम युवक : रैह बूझि लिपऽ । हिनका लोकनि के दक्षिकक दुःख सुनि-मुनि कऽ आनुल-व्याधुल होयवाक आदति छनि । आखवासन दौडवाक आ, उन्नत भऽ जयवाक आदति....

दोसर लोक : नै-नै ! हिनका सबसँ लड़ला सगड़लासँ की फायदा ?

पहिल लोक : मुदा विचित्र मुद्राव अछि अहाँक यी साहेब ! ई लोकनि हमरा सभके भरि जन्म फाँकी दैत रहथि, जाला-पट्टी पड़बैत रहथि आ हम इहो नहि जकाव तलब करिथनि जे ओ लोकनि एना किएक करैत छथि ? हम हुनकर कुतर्क कालिरो पकड़ि कऽ नहि पुछिथनि जे ओ किएक एना...

दोसर लोक : बिल्कुल नहि । ई लोकनि अहीक हिनक चारैत सोचैत रहैत छथि । बड़ व्यस्त रहैत छथि । हिनका सभक कार्य बुद्धिजीवी वला कार्य छनि नै । ई लोकनि हरमन अही लोकनिक समस्याक वास्ते चिंतित रहैत छथि ।

पहिल युवक : हमरा समस्याक लेल ? सेहो ई लोकनि ? चिंतित रहैत छथि ? (स्वंगसँ)

दोसर लोक : तखन बार की ? हिनका देशक कतेक काज रहैत छनि । उपरसँ अहाँक गाम, सगाथ जिला आ प्रांतक उदधानक वास्ते प्रगतिशील डेग उठयवाक वास्ते सोचिबै रहऽ पड़ैत छनि । बड़ कार्य छनि । हिनका सबके यदि अहाँ अपने व्यक्तिगत समस्या सभमे ओझरबैत रहबनि, अपने 'बदली' आ 'पोस्टिंग' करवनामे खानगीए कार्य करवनामे ओझरीने रहैत जखनि तँ ई लोकनि देशक काज कखन करैत छयताह ?

पहिल लोक : बाह भाव साहेब ! देशक काज ? आ' हम की देशसँ बाहर छी ? हमर आतिगत काल भऽ जयवा मे देशक काजके कोन बाधा या हानि भऽ जाइत छैक यी ? हमर, हमर धिया-पुताक सीते जीवन कर्नाथ बीति जाय, आ' ई महानुभाव लोकनि देशक (स्वंगसँ) वास्ते काज करैत रहताह ।

दोसर लोक : अहंकि विश्वास कियेक नहि होइए जे ई लोकनि अहीक देशक काज....

पहिल लोक : जानि नहि कोन छनि केहन छनि हिनकर सभक देश

जकरा वास्ते ई सभ वैशीवान विदेशीने भीखड़ी जमीने
रहैत छथि । आ दमादन अखवार सभमे अपन मुखड़ा आ
वक्तव्य छपवैत रहैत छथि ।

दोसर लोक : पूं पूं ! एहन बात अहाँ कियेक सोचैत छी ? एहन प्रति-
क्रियावादी बात । कियेक सोचैत छी ? कोधमे आन्हुर नहि
बनि जाउ । भीधमे उन्हा बात नहि सोचू ।

पहिल लोक : कियेक नहि सोची यी ? भला कहू ! की तमाशा ! ई
उन्हा बात छैक ? कारखाना बनन बेगुसरासमे आ तकर
सकल वनबावड हमरा समक लोक जापानमे बैसल छथि
दू वर्षसँ । देश भटकी ?

दोसर लोक : एहिमे हर्जा की ? अहाँ फटत तकनीकी ज्ञान ओतेक नहि
बढ़ल अछि । जा' ज्ञान तँ अपनासँ छोटकोसँ लेबाक चाही ।
ज्ञान अतए भेटय ओतहि दौड़ि जयबाक चाही ।

पहिल लोक : छोड़ू छोड़ू उपदेश छोटव । ज्ञान छोटको सँ लेबाक चाही ।
हम अहाँ सँ पुछैत छी बल्कि बहाँ सभ गोठय सँ पूछैत छी
(दर्शको के देखैत) जे अपना फटत तकनीकी ज्ञान कियेक
नहि भऽ सकल ओतेक ? एतेक वर्षक बादो एतबो टा
तकनीकी ज्ञान हमरा सभके नहि बाबत एकरा वास्ते
हमर बाप बोधी छथि ?

पहिल पुत्रक : अहाँ हा, भाइ साहेब, अपना बाप के अनेरे कियेक अनंत
छियनि एहि मे ?

पहिल लोक : न-नै ! अहाँ कहू जे हमर वा हमरा लोकनिमे कितकर
बाप बोधी छथि एहि बातक लेल ? अपना फटत तकनीकी
ज्ञान नहि बढ़ि सकलैक तँ ?

दोसर लोक : शान्त भाइ ! धैर्यसँ काज लै जाउ संभुवर । अहाँक ई
अभियोग ठीक भऽ सकैत अछि, मुदा हमरा सभ के उहाँ
तँ सोचबाक चाही जे देश एखन संक्रान्ति कालमे जीति
रहल अछि ।

बसो एक गोठय : तीन चारि वस वर्षा तँ भऽ चुकल । आव कहिया धरि ई

संक्रान्ति काल रहय बला अछि यी साहेब ? हमरो पर-
गोताक जन्म धरि की ? हमरो बस एतैक वर्ष भऽ लेल
आब । ई संक्रान्ति काल आविर कहिया धरि माड़ी
बीचत ?

दोसर लोक : हँ, हँ संक्रान्तिकालसँ देश एखन गुजरि रहल-ए ।

बसो एक गोठय : तँ जेना बानापुर, पसिजर, रेलगाड़ी काश्मीरक बड़का
पहाड़ी गुफासँ गुजरि रहल-ए ।

दोसर लोक : अरे नै भाय ! संक्रान्तिकालसँ ! (जेना जमेसा करैत)
ऐहन कठिन समयमे (सुझाव दैत) अपन विश्वास नहि
समयबाक चाही । यदि हमरा लोकनि देश हितमे धैर्य नहि
राखब, त्याग नहि करब तँ देशक वास्ते के करत ? अहाँ
अमेरिकीक उदाहरण दिअ ओतक 'व्यक्ति-व्यक्तिक स्थाने
सँ ओ देश आठ विश्वक सभसँ पैघ शक्ति अछि । हमरो
गब यदि संतोष' धैर्य आ त्यागसँ काज नहि करी तँ ककर
देश बर्बाद होएत ?

पहिल पुत्रक : सन्नामल अरबीक । देश ओकरे छियै । सभटा सिपाहियो
पुनिस ओकरे । राइफलक दोकानो ओकरे । वा, ई सभ
गोठय जे हमरा धैर्य राखऽ नहि कऽ रगामी बना रहल
छथि—ओहो सब गोठय ओकरे छथिन । हमर बसो मे
अछि । हमर तँ बस ई संक्रान्ति काल बिक जे सार बचीत
वर्षसँ चलि रहल अछि । बीरसी वर्ष धरि चलत । तकर
तँ इएह अछि महान् संक्रान्तिकाल ! हमरा सभ तँ अजी-
चक फेरल कोहा-धैल धिकड़' वा खपड़ि, बाटक काँ
आ' छत्तामे...पड़ल छी....।

दोसर लोक : आह, से नहि वाली भाय । सभटा ठीक-ठाक भऽ जयनैक ।
बिन्हा नहि । सब हेतैक । अपनहि देशक पावन भूमि
पर सभ किछु हेतैक देखिबी मे !

बसो एक गोठय : हँ, हँ, गोहत्या बन्द करवा लेल सेल्स देसल लगाओल जयनैक ।

दोसर लोक : ओह ताश्मदायिक चर्चा धुनि उठाव ! जहिना कि देश पर
आगी लठवऽ लगैए कि....

क्यों एक मोटय : कि पाकिस्तान धरणी देवः लक्ष्म, बाढ़ि आवि जाइए कि आन्ध्र प्रदेशमे अम्हर विहाड़ि छठि जाइए ।

दोसर लोक : हँ कोनो के कोनो संकट विपत्ति हमरा लोकनि कईत पैर छानि लैए तकर परिणाम के प्रगति बम्हि जाइत बलि सवटा !

क्यों एक मोटय : के छानि लैये पैर के ?

दोसर लोक : आत्मिक विपत्ति । हमरा सभके कईत चरण अचानक छप्प भऽ जाइए । अन्वधा आव अपन देश सब तरहे स्वतंत्र आ, आत्मनिर्भर अछि । निडुहा कऽ आत्म निर्भर-अन्नसँ औषधि छरि मे ।

क्यों एक मोटय : अजुके एखार पड़िवैक अछि, आत्म निर्भर जी, नफली दबाइ खयला पर कतेक स्वर्गारोहण भेलैक अछि ।

दोसर लोक : छोड़ू ! एतेक एतेक लोक भऽ गेला पर एक आघ टा घटना मम विमर्शित अतिरिक्त देशमे भऽ जाइत छैक । भरि दुनियामे अहाँक देशक मान-प्रतिष्ठा कतवा-कतवा बढल कतेक साख बढलण से किलु अछि जानकारी ? (गर्वसँ) आइ विश्व बाजारमे अहाँक देशक नम्बर एकावन पर पहुँचि गेल अछि । ई परम गौरवक विषय ! (आत्मसुख होइत)

क्यों एक मोटय : मुदा विश्व बाजारमे कतेक देश होइत छैक भाय साहेब ? निरीह-निरक्षर जनता के कसो इहो बुझा देल जाइक तँ बड़ कुपा अपनेक !

क्यों दोसर : इएह, एकावन तँ अवश्ये टा हेतैक (हास्य करैत)

चारिस लोक : बात के, सत्य के गंभीरतासँ सुलझाव चाही । तखनहि देश आगाँ वडैत छैक । दोसरा-दोसरा देशक दासी नागरिकमे छैक ई भावना, ई नैतिकता आ, चरित (खेब अनुभव करैत) अपना कतऽ एकर बिलकुलै अभाव छैक ।

पहिल युवक : ज्ञानक मे ?

दोसर युवक : भोजनक मे ?

तेसर युवक : स्वास्थक मे ?

चारिस युवक : रहवाक दासी घरक मे ?

दोसर लोक : (विमर्शित आ खीझावल सन) नै भाय ! चरित आ, नैतिकताक अभाव । आ, जाहि देशक जनतामे इएह नहि हो ओतक की उरधान हेतैक ? की विकास हेतैक ?

पहिल युवक : (प्रस्ताव करवाक मुद्रामे) तँ एकटा कियेक नहि करी हमरा लोकनि ?

दोसर लोक : (उत्साहित होइत) बाजू ! बाजू !

पहिल युवक : कियेक ने हमरा लोकनि अमरीकासँ कीनि आनी चरित आर नैतिकता ? कीतलाहा गृहमे तँगे इहो दुनू चलि आओत । जहाज छवँ नहि लागत, समय सेही बाँधत । आ जखन ओ गृहम उधारी दऽ सकैत अछि तँ इहो सब उधारी दऽ सकैये । तत्काल पारित करैसी बाँधत आ सबसँ विशेष बात के एहि मे टेन्डर-टेन्डरक सेहो कोनो सबकर समेला नहि । आकि छैक ? (पुछैत मुद्रामे)

दोसर लोक : (कोधसँ वेखैत) अहाँ लोकनि बड़ उग्रपंथी लागि रहल छी यी ? (पुनः शांत होइत) ओहना, हमरा सब एखन गृहम वा नैतिकता नहि, एकरा दुनू सँ मुख्यबान बरखु, पूरेनियम मंगाइए रहल छी । (कनोक चुप होइत सबके एक मज्जरि मौलैत) ओना अपना देशक एक टा जे सबसँ भयावह दुर्भाग्य अछि... ..

पहिल युवक : नेतागिरी !

दोसर लोक : इएह, इएह उग्रपंथी आवहार-विचार । अहाँ लोकनि सही बड़ उग्रपंथी बुझाइत छी यी ?

दोसर युवक : अहाँ अपना विषयमे की विचार रखैत छी श्रीमान् ?

तेसर युवक : कोनो खुरसद नेताक पकिया मुदा स्थानीय एजेंट (ओकरा देखैत) की विचार ? (दोसर लोक खीझावल भरत व्यस्त)

दोसर लोक : शिव शिव एना नहि बजवाक चाही अहाँके । मिथिलाक अपन महान संस्कृति आ शिष्टाचार छैक । अहाँ लोकनि

मैथिल नवपुरिदा बिरहु एना अलगटेंट जकां नहि करी ।
एहि तँ मिथिला आ मैथिलक, धप्रतिष्ठा हएत । एखनो
फेर मिथिले ! हम अपन लोक बिरहु अहाँ लोकनिक
(विनम्रतासे) ।

तेसर युवक : अहाँ हा ! जतेक जाकड़ माक, खुस्तड नेताक पाकन
परोड़क नउरि सव छथि, सेहो तँ हमरे लोकनिक
आदमी छथि ने....

दोसर लोक : नै, से बात नै छैक । हमरा पर विश्वास करू । भरोस
राखू ।

दोसर युवक : भरोस ? से तऽ आँखे मे । आर अछि की अपनेक लग ? आब
देखिमी ने कखन तँ ने एक प्याली पाइ पीवाक तृष्णा भऽ
रहए । बीस पाइमे भेटैत छैक । मुदा कतसँ पीबू ? जेबीमे
पाइ रहए तखन ने । तथापि भरोसमे, विश्वास रखवाँमे
कोनो कमी नहि अछि महाराज । भरोस नहि हो तँ मनुष्य
.....ताहुँ पर अपने सन, अपने सन एजेन्ट भेटि जाथि
'बोद भरोस छाप' एजेन्ट तखन तँ फेर....

दोसर लोक : (किचकिचा कऽ) अहाँ दीकें उपपंथी छी । अहाँक बजनाइए
मे बुझा रहए-ए जेना कोनो आतंकवादी संगठनक लगैत
छी । (तावत दर्शक सभमे जेना कतफुसकी शैथ लगेत छैक
आ, हल्लुक फल्लुक पड़वाक उपपम दृश्य । लोक एक
दोसराके पूछऽ लगैत छैक कत छै भाष उपपंथी । कहाँ छैक
आतंकवादी संगठन ? के पकड़लकें ओकरा सबके । तखने
पहिल लोक दोसर लोक के सम्बोधित कऽ कहऽ लगैत
छैक)

पहिल लोक : हमहुँ गौर कऽ रहल रही जे आखिर अहाँ मनु की छी ?
मुदा आव जा कऽ दशा फलल जे अहाँ कोनो खुस्तमय
नेताक अवस्थे किछु छिदेक । गार-तार किछु । (ओकरा
पीठ पर पोहूँत जकां सिनेहसँ पुछैत छैक) ककर, लिपेन
अहाँ ?

दोसर लोक : जित्तिव बात थी । हम किजे होअऽ मैथिलनि किनकी किछु ?
हम तँ समझा देखऽ आवल रही । हम...हम किएक होअऽ
जयबै ककरो किछु ?

पहिल लोक : नः । हमरा तँ पनका बुझाएत अछि जे अहाँ कोनो राज-
नैतिक बलाबी करऽ आवल छी एतऽ । सोचने हएव जे
किछु जनता प्रकारक लोक जमा छै एतऽ । कनीक दिमाग
सेहो हेरीक । चली, कनी विषा एतहु छोटैत चली । ओही
अनाएक बीज जे अंकुराए, जन्म कर, कखिल सेहो लहलहा
उठै, घाली ओझिमे अनाएक दाना नहि लगीक.....आ,
नैको लोक ओहि फसिलक आगा बाटी मौतमक मौसम
गकिते रहि जाय । एहि वाँस फसिलक रखवारीमे सभ दिन
मगले रहम । एहि वाँस फसिलक जाहिमे कहियो कोनो
जीश की दाने ने लगेक ! तँहू ने ? महाराज ?

दोसर लोक : अहाँ की, राजनैतिक कन्ट्रोवर्सी डाइ करवाक इस्वी
छी जी ?

पहिल लोक : बिलक्षण बात ! अनवत ! राजनैतिक विवाद ! एँ ?
बड़ दिख ।

दोसर लोक : हमरा तँ बुझाएत अछि । कियेक तँ जनता जाहि बातके
बुझि रहए तँक ताहिसे ओकरा अहाँ भटका रहल छियै ।
एही बात में तँ अहाँक कतेक पना बलीए । (चितवैत स्वरमे)
ई बड़ अधलाह बात ! बड़ खराब । ई एक प्रकारक देश-
द्रोह थिक । समाजक सङ्ग विश्वासघात ।

कसो एक मोटय : देशद्रोह ? विश्वासघात ? तखन तँ

दोसर लोक : अहाँके अछि बुझल कि नहि जे एहि अपराधक बासी
अहाँपर कानूनी कारवाई कएल जा सकैए । एहन
गम्भीर सामाजिक आचरण करवाक चलते कानून द्वारा
अहाँके हथकड़ी धरा कऽ अहलमे बन्ध कऽ देल जा सकैए ।

पहिल लोक : सँह तऽ कहैत छैक । एँ थी बलाबी करी अहाँ आ' जेहल
मे दूमर जाय ई लोक ? मियाँ मंसूर । धिक्कार
अछि !

दोसर लोक : (एकएक विनय होइत) अपने कोन पार्टीमें एक्लिनेटेड छी ? बाइ दि के...फॉरेंस ईका, जनमंथ मतलब जमता समाजवादी-साम्यवादी आ कि स्वतन्त्र...ककरासँ ?

पहिल लोक : हमर अपन पार्टी अछि-कराक । एहि बैरपर हमरा लोकनि कोनो चुनौत नहि लड़लौहें । (जेना धमकी देत) मुदा ई बुनि चुली ! वर्तमानमे हमर कांडर अछि एकाधन देशक !

दोसर लोक : की 555 ? (धक्काधल सत)

पहिल लोक : जी 555 । चयड़ा देखी । जालल दीदी ?

(पाटी तँ हल्ला गुल्ला आ एकटा प्रमुख स्वरूपहि रहल छैक जे भाय एतऽ की भऽ रहल छैक ? कोनो राजनीतिक पार्टीक कार्यक्रम भऽ रहल छैक की ?)

दोसर लोक : (अचानक भंगिमा बदलैत) हँ, एतऽ एखन राजनैतिक पार्टीक एक टा देश व्यापी महत्वक कार्यक्रम भऽ रहल छैक । (तकर बाद ओ ओहि माइकीकौन जग जाय चाहैत अछि जे माइक सत्यक सेही भऽ सकैत छैक आ, काल्पनिको ! तावतहि साँवरिया घीसी, कुरसा आ एहि बेर सडाक्षक मोटका माला साथ पर टोपी पहिरने लोकक सेमाँ आवि जाइत छैक आ' दोसर लोक विरोध करैत छैक)

साँवरिया : नै-नै । मूठ बात । पार्टी-कार्यक्रम नहि छैक । एतऽ हमरा सब प्रार्थना सभ करवा लेल जूमल छी । अपन महान रोगी नेताक स्वास्थ्य लाभक लेल सामूहिक रूप सँ नागरिक प्रार्थनाक लेल उपस्थित छी । अपन प्राणप्रिय बृद्ध नेताके दीर्घायु विअशवाक लेल ! (ओ चेहरा पर भक्तिक विह्वलता अनेए । दोसर लोक आ साँवरिया एहि घोषणा सँ पहिल लोक अस्त व्यस्त आ चित्तिक भ' जाइत अछि आ ओकरा सभक बात के कटवाक कोशिश कर' लगैए)

पहिल लोक : नई भाय लोकनि । से नई । ई लोकनि मूठ बाजि रहल अछि । अहाँ लोकनि भ्रममे बुनि पड़ू । एतऽ तँ हमरा

लोकनि किछु नचमुचिया, नाटक लेखपवा लेल जूमल छी । बाहरक एहि सबजनिया स्थान के हमरा लोकनि एकटा नाटक लेखपवा लेल चुनलौहें । देखैत छियै चारु कात सँ अजैत जाइत जन-जीवनक बीच एहि खूबल लोक-प्रवाह मे हमरा लोकनि एकटा सामाजिक नाटक खेलाय चाहैत छी, जकरा अवैत-जाइत सर्वसाधारण लोक सेही देखि सकय । ई नहि जे भण्य हुँलक समुद्र मंच जकाँ खाली बाबुए-भैया-हाकिमे-मंत्री । लोको देखि सकय ।

दोसर लोक : (अधीर होइत) नै नै ! अहाँक कहलामे हुएत ? एहि पब्लिक प्लेस के हम पार्टी कार्यक्रमक वास्ते चुनलौहें आ' साएह हेतैक एतऽ ।

साँवरिया : से नहि हुएत । एतऽ एखन सामूहिक नागरिक प्रार्थना हेतैक । पहिने प्राण-रक्षा ! एते' मोट महान नेताक प्राण-रक्षा ।

दोसर लोक : ई डीपी-पावण्डी ! कऽ निषऽ

पहिल लोक : ईह, पार्टी-भाषण आ' प्रार्थना सभा ! ककर दिन छैक जे साटक छोड़ि कऽ आन किछु करत एतऽ....

साँवरिया : (खूब जोरसँ) हँ जी, हे-ए हम ! हम तँ करब प्रार्थना-सभा देणके एकरे जरूरत छैक एखन । एतेक लोक जमा भेल अछि एतऽ । एतऽ हमरा सब जवन मरणापन्न महान नेताक वास्ते स्वास्थ्य लाभक प्रार्थना करब । आइ राति पीने नी बजेक बुतेटिनमे ई समाचार आयब अवगत आवश्यक छैक, जे हमरुँ अपन एहन महान नेताक और्दा बड़वाक लेल सामूहिक प्रार्थनाक सभा आयोजित कयलौ । भरि शहर ।

पहिल लोक : (क्रोध आ' विवशतासँ) निश्चित बात । ई स्थान चुनलौहें हमरा लोकनि नाटक वास्ते । आ' ई अहाँ लोकनि की बक-बक एऽ रहल छी नी ? कहू तँ, हमर सभ टा पातल लोक एतऽ आवि पहुँचल अछि ।

दोसर लोक : तँ पगुर घोआ कऽ बैसविधनु एखन !

पहिल लोक : बाह बाह ! हमरा लोकनि पैदल, साइकिल पर जेना-जेना घुमि घुमि कऽ सभ ठाम कागज पर, कूट पर लिखि-लिखि

कऽ टंगने छिऐषा जे भाइ एहि चौकड़ी पर नाटक हएत आ' ई कोन समाजा कऽ रहल छी अहाँ लोकनि (बुझै देखैत जेना बुझयबाक चेष्टा करैत) अहाँ लोकनि खान खाह हुनर निर्धारित कार्यक्रममे विघ्न उपस्थित कऽ रहल छी ? अपन टांग झड़ा रहल छी—नाक दुखा रहल छी । चलू, हटू एत'सँ । दियऽ जगह । (ओकरा माइफोनफोन लगसँ हटयबाक प्रयास करै छैक)

साँवरिया : (जेना बाँहि मँजैत) नाक हवा दुखा रहल छी कि तोरा लोकनि ? (ओ शगड़ा करवा खेल प्रस्तुत छैक)

पहिल लोक : मतलब ? ई एतेक रात दर्शक सब शखससँ ठाढ़ छथि नाटक देखवा लेल । आ' अहाँ लोकनि मिलिकऽ ई कोन उपद्रव ठाढ़ कऽ रहल छी ? दर्शक बुझयबाक आ' ई मंचक व्यवस्था हमरा लोकनि कयनीहँ नाटक करवा लेल आ कहूँ छैक जे 'कएल-सएल पर श्री जगरनाथ' कऽ अयलीहँ अहाँ लोकनि । हमर मंचे हथिया रहल छी । अनवत्त चलाही । चलू, हटू, हमरा शुरू करऽ दियऽ नाटक । बड़ समय भऽ गेलैक हटू एत'सँ ।

दोसर लोक : मज्जाल धिक ! ई पब्लिक प्लेस छियै । कोनो व्यक्तिगत लाभक वास्ते एकर दुरुपयोग होवऽ देल जायत ? सेहो एतेक रात जागरुक जनताक आँखिक तोषा ? एकर दुरुपयोग भऽ जायतैक ?

पहिल लोक : नाटक कि कोनो राजनीति छैक जे दुरुपयोग....

दोसर लोक : चुप्प रह । एहि नाटक-काँटक सँ की बेनिहार ? मरऽ जाइ तँ रासि गाबी ? देशक जनताकेँ एखन राजनैतिक चेतनाक जरूरत छैक । नाटक आ' प्रार्थनाक नहि ! सीसे देशमे अकाल पड़ल अछि । आ' एतऽ मनोरंजन चलल ! (लोककेँ सम्बोधित करैत) ते' इएहू सोचि क' जनसाधारण लोकमे समझदारी आ' चेतना बँटवाक उद्देश्यसँ हम एत' साप्ताहिक भाषणक कार्यक्रम चालू क' रहल छी । (गला साफ करैत बजबाक उपक्रम)

हँ तँ, भाइ बन्धु आ' अहीनि लोकनि....

एगो एक मोटय : बहिन कहीं छथि एतऽ एतहु टा । समझा भाइए सब "" (तावत बीचहिमे साँवरिया बाजऽ लगैत छैक)

साँवरिया : भाइ-बहिन लोकनि ! ई घोर विडंबने धिक जे एखन एहि क्षणमे हमरा सबक एक मात्र जन-नेता, एहन महान नेता अस्पताल मे पड़ल-पड़ल अन्तिम साँस गनि रहल छथि, जे बड़ी ने नाड़ी घीचि लेनि "" तोते देश आओर भरिसंगारक लोकक आँखि आ' मन एही नेता खेल टांगल छैक आ, ई महापथ राजनैतिक जागरण कऽ रहल छथि (घृणासँ) धिक्कार धिक । गहार लोक सब नहि तन । धिक्कार ।

एगो एक मोटय : त. वास्तवमे कहूँ तँ भला ! कुत्रिम सहानुभूतिसँ)

साँवरिया : एखन हमरा लोकनिक महान नेताक जीवन-रक्षाक प्रश्न उपस्थित अछि, अछरी अछि एहि वास्ते जे बेसीतँ बेसी संस्था सब सामूहिक प्रार्थना करय, अधिक सँ अधिक संख्यामे अष्टजाम हवनयादि, पूजा-पाठक आवश्यकता छैक, कि एहि भाषणबाजीक ? कियन कहैत छैक जे भोज ने भात हडहड गीत

एगो एक मोटय : त. सत्ये ! अहो ! महान नेताजी ! अहाँ हिनक उभेर खूब बड़ा दियनु हे छठि परमेस्वरी !

साँवरिया : (सहयोग प्रयत्न जकाँ) एहने लोक सब । इएहू बेमौसिम मलार मोनिहार सब संपूर्ण देशक अविष्य घोषण कऽ देलक अछि । (क्षणक चुप रहैत) राजनैतिक चेतना....

दोसर लोक : नै नै, अहाँक प्रार्थना ! (गंमथसँ)

साँवरिया : नखन की ? आ, तेहो लोक रह्य अहाँक तँ एकटा बात । सोझाँ सब लोक कि तोरा पाटीक छऽ । चीन्हीत छहूक ? (सभकेँ देखैत मुग्ध होइत जकाँ) देख लहूक सबक मुद्याकृति पर पतारत प्रार्थना-पूर्वक पवित्र आभा । एही देखि कऽ तोरा नहि बुझा रहल छऽ जे ई लोकनि प्रार्थना करवाक नैष्ठिक

मुझे छवि ! ई लोकनि प्रार्थना सभा करव आयल छथि ।
ई प्रार्थना सभाक लोक छथि ।

पहिल लोक : अजब ताल अछि । ई दर्शक लोकनि तँ नाटक देखवा लेल
आयल छथि । हिनका सबके हमरा लोकनि नाटक देखवा
ले, स्थान-स्थान पर सूचना नोसने छियनि, तँ आयल
छथि । ई लोकनि दर्शक छथि । हमरा सभक सामाजिक
नाटक देखऽ आयल छथि । आव हटू-हटू अहँ लोकनि ।
(ओ माइक्रोफोन लगवै हटवऽ चाहैत छैक) छोड़ू, छोड़
हमर माइक ।

साँवरिया : आथ एकर सदुपयोग प्रार्थना सभामे हेतैक तखन किछु ...

पहिल लोक : दिवऽ, छोड़ू हमर माइक । जेवी खर्ची काशि-काटि कऽ
एकर इन्तिजाम करी हमरा सब आ, एकरा हथिया कऽ
'सदुपयोग' करताह ई ? से की, तँ प्रार्थना.....अलखतै
वात ! माइक हमरा लोकनिक.....

साँवरिया : थलऽ चलऽ ! हिनकर माइक ! ई तँ नेहरू युवा केन्द्रक माइ-
क्रोफोन छैक । शूद्र सरकारी छैक । एकरा वास्ते किराया
कियेक देवऽ पड़ल हेत ? साँसा-गट्टी बँत छहक पब्लिक
के ?

पहिल लोक : नै-नै । गुरु सम्पत्त ! माँगऽ ठीके गेल रहियैक नेहरू युवा
केन्द्रसँ । मुदा ओकरलाछ छ स्पीकर चल गेल छैक
ओकर हाकिमक बेटीक भियाहमे बरिमाती पाटीक वास्ते ।
रहि, यदि खाली रहितैक तँ बेचारे अवश्ये टा दऽ दितथि,
बड़ दिव स्वभाव छनि बेचारेक । (एक क्षण रुकि कऽ जेना
सचेत होइत) मुदा एखन.....हमरा सब के एकर भाड़ा
देवऽ पड़त । ई भाड़ाक बिक कंपनी वाला बड़ कुपा कऽ कऽ
मात्र दू घंटाक वास्ते उधारी देलक-ए ।

बयो एक मोटय : (उजियारत स्वरे) आथ दिवौक ! हिसाब जुनि दिव ।
आरम्भ कर नाटक ।

पहिल लोक : हे हे, हटू-हटू । बड़ देरी भेलैक । सभटा दर्शक उजिया

कऽ बिना देखनहि पड़ाय लागत । सभटा अभिनेता सब
दिक-दिक भऽ रहल छथि ।

बयो एक मोटय : की दिक-दिक एहिमे ?

पहिल लोक : बाह रे बाह, जनताक मनोरंजन वास्ते हमरा लोकनि ऐतैक
मेहनति कयलैहै । जनता आयल अछि नाटक देखऽ आ,
ई लोकनि एक मोटय राजनैतिक भाषण आ, दोसर मोटय
प्रार्थना सुनवऽ चाहैत छथि जनता के । हट मऽ गेल ।
(किछु जोरसँ) हटै जाउ । हटू । कुपया हटि जाउ.....
(स्वस्थ मुदा प्रार्थनाक स्वरे ओ माइक पर धजवाक उपक्रम
करैत अछि मुदा स्वर काँपि रहल छैक धबराहटिमे) हँ,
तँ भाय लोकनि । हमरा सभ नाटक आरंभे कऽ रहल छी ।
दर्शक गण कुपया क्षमा करु । अपनै तँ सब किछु देखिये
रहल छी तखनसँ । भाफ करी । देखलियै, नहि की-की
विषय उपस्थित करैत गेलाह-ए ई लोकनि ? छँर आब
हमर सामाजिक नाटक शुरू होइत अछि । एकर नाम
अछि

(ताबतहि माइक लुप्तवाक दृश्य उपस्थित भऽ जाइत अछि ।
क्रमशः पहिल लोक, दोसर लोक तथा साँवरिया, एहि तीनू
गोटके बीच माइक छीनवाक संसदि आरंभ भऽ जाइत छैक ।
संगहि तीनू मोटय अपन-अपन बातो बजैत अछि)

“पहिने हम राजनीति करब

“पहिने हम प्रार्थना-सभा करब ।

“पहिने हम नाटक करब.....

अकसरमुसा अस्थित : देखू, अहाँ लोकनि अगड़ा जुनि करैत जाउ । ई पब्लिक
प्लेस थिक, सबजनियाँ स्थान । एतऽ एना अगड़ा नहिकरी ।
अहाँ लोकनिक एहन कटावशसँ नगर सभ्यता पर बड़
खराब प्रभाव पड़ैत छैक । अहाँ जनैत छियैक ? अहाँकि
अछि भुसल जे एक गहरमे कतेक जाति, धर्म, भाषा आ
सामुदायिक लोक रहैत अछि आ कतेक पेशाक लोक रहैत

छैंक ? (पुरुषभूमिने 'हम पंछी एक डाल के' गीत बजैत रहैत रह्य तें उसमें ।) हिनका लोकनि पर खराब प्रभाव पड़ैत छनि ।

बयो एक गोठय : (बगलमे ठाड़ घुबकसँ हिनका बिस इशारा करैत पुछैत छैंक) "अपने के बिकहु ? की बिकहु ? आ कभी खैल प्रसिद्ध बिकहु ?

अफसरनुमा व्यक्ति : अहाँ लोकनि के भरितक जात नहि अछि (सबके सौलैत जकाँ नजरिसँ देखैत) जे इएह एहने छोटा-छिन लगनिहार आपसी झगड़ा सेहो साम्प्रदायिक दंगा बनि जाइत छैक ।

(ओम्हर तीनू व्यक्तिक मूक झगड़ा चलिये रहल छैंक । आँखि-हाथ-मुँह आदि मुद्रासँ देखल जाइत छैंक)

आइत हा । ज्ञान्त अहाँ लोकनि ज्ञान्त रहै जाइ । पब्लिक प्लेसमे झगड़ा-झंझटि नहि करैत जाइ । अपन स्वतंत्रताक एहन वुरूपयोग नहि करैत जाइ जाइ । अपना-अपना अधिकारक वुरूपयोग नहि....

बयो एक गोठय : (ज्ञान्त करैत) ज्ञान्त भऽ कऽ मुनैत जाइ जाइ यो । ई की अट-अट कएने छी ? एतेक संभोर बात ई साहेब कहि रहल छथि .. आ, अहाँ लोकनि....

अफसरनुमा व्यक्ति : (घुबक के प्रसंगसँ देखैत) हँ ज्ञान्त रह । एहि प्रकारक एहन आचार-विचारसँ हमरा लोकनि के लोक सभ असम्बो बुझि सकी-ए (हाथ जोड़ि कऽ) हम कइल जोड़ैत छी, हमर निवेदन जे अहाँ लोकनि शान्ति आ' व्यवस्था बना कऽ राखू । आ' शान्तिपूर्वक अपन-अपन प्रोग्राम सफल करू । इस अहंकि चहूयोग करवा खैल प्रस्तुत छी । हम अपन सेवा अर्पित करवा खैल आयल छी, बूझू जे अस्सी कोरा बनारस सँ ?

बयो एक गोठय : ई सञ्जन के बिकाह ? सम्भवतक संशयत प्रथिभूति ?

बुधिवधिया-२८]

बयो दोसर गोठय : गुंघेरक रिटायर्ड डी० एच० धिवाह । तीन मास पुर्व रिटायर भेलाह अछि । आइ-काहिह समाज-सेवामे अपन जीवन अर्पित कएने किरि रहल छथि ।

अफसरनुमा व्यक्ति : अपने लोकनि परिस्थिति बुझियौक । हमर निवेदन अछि (तीनू गोठय के कहैत) परिस्थिति बुझियौक ।

दोसर लोक : बुझैत छियैक । मुदा पहिने हम राजनीति करय ।

सांवरिया : नै । पहिने हम प्रार्थना-सभा करय ।

पहिल लोक : नै । पहिने नाटक हुएत ।

दोसर लोक : नै । पहिने हम....

सांवरिया : पहिने हम ।

पहिल लोक : पहिने हम ।

अफसर : देखै जाइ । अपनामे एना झगड़ा-संझट करैत जायब, संगतीमे सब टा गड़बड़ भऽ जायत । पुलिस हस्तक्षेप करत आ सब टा नाश भऽ जायत । सबक प्रोग्राम अमेरे फेल भऽ जायत । फल हुएत जे तीनूमे सँ बयो गोठय किछु नहि कऽ सकैत जायब । (किछु सोचैत) दोसर बात, जे समयक मोल बूझी । एतेक काससँ एतेक रास लोक ठाढ़ छथि । इहो लोकनि तमसा जयलाह ।

पहिल लोक : (किछु सोचैत) कियेक ने हमरा सब एकर समाधान प्रजातन्त्री उपायसँ कऽ ली, (अफसर के घूँछैत छैंक)

अफसर : उचिते किने ! अपन देशक आवर्णों तँ प्रजातन्त्री अछि । कहू । की होयबाक चाही ।

पहिल लोक : कियेक नहि हमरा लोकनि उपस्थित दर्जकसँ थोट करा ली ?

अफसर : से की ? ताहिसे ?

पहिल लोक : पब्लिक जे चाह्य, सएह कार्यक्रम पहिने हो । भोटे भऽ जाय । एहिसे जनताक रुचिक पता सेहो पलि जायत आ' स्वयं मे ई शुद्ध जनतांत्रिक व्यवस्था सेहो भेल ।

[बुधिवधिया-३९]

(ओकर एहि प्रस्तावसँ हुनूक केहरा चङल जकाँ बुझावत छैक । ओकरा अफसर पछि लैत छैक आ युक्ति पेश करैत छैक)

अफसर : नहि, हमरा विचारे तँ ई उचित नहि हुएत । व्यवहारिकी नहि । मनुष्यसँ ओसरोहटिधे टा बढत । आपसी मतभेदे गंभीर हुएत । हमरा विचारसँ अपना देशमे एक टा थड़ लोक परम्पराक पुनारंभ भेल अछि । आ, निश्चित हमरा लोकनि के ओही परम्परा के मजबूत करबाक चाही ।

कसो एक मोटय : कौन परम्पराक महाशय ?

अफसर : निर्विरोध चुनावक परम्पराक ।

कसो एक मोटय : (बोवहिमे) अलवत्त ! एँ यी, एक-एक टा सीट लेल गाहीक गाही उम्मेदवार ठाड़ होइत छथि सीसे चुनाव क्षेत्रमे, एक-दोसरा उम्मेदवारक लडिधर आ' हँतेरीक संघर्षसँ चमकू आ' बम-विस्फोटनसँ आतंक पसरल रहैत अछि कतेक केँ अभेदे अपट्टी खेतमे प्रान भलि जाइत छैक आ' अपने फरसा रहल छी निर्विरोध चुनाव ...

अफसर : (किञ्चित उद्दिग्न होइत) हम ई कखन कहल जे से स्थिति नरुपामे बहुत छैक । मुदा छैक । एखनहि अपना एक प्रतिमे नेताक चुनाव बड़ आदर्श दर्शनसँ पूर शालीन आ' स्नेहपूर्ण वातावरणमे निर्विरोध सम्पन्न भेलए । आ' हमर विश्वास अछि बलिक भविष्यवाणी जे, एहि घटनाक प्रभाव पुरा देशक भावी चुनाव पर बड़ गंभीर रूपेँ पड़त ।

कसो एक मोटय : मतलब जे वोट नहि कराओल जाय ?

अफसर : हँ, एखन हमरा लोकनिक कर्तव्य अछि जे उपस्थित वर्गक केँ ऊविषायसँ बचावही । ई लोकनि अत्य ऊँचि रहल छथि । मोहित भइ रहल छथि ।

पहिल लोक } तँ हम की करी ? प्रोग्राम तँ हमर तय छल । (तीनू एकहि
दोसर लोक } रांग कहैत छैक)
साँवरिया }

अफसर : (तीनू के पौलहवैत जकाँ) कौनो बात नहि । अहाँ तीनू मोटेक प्रोपाममे कोनो अन्तर नहि अछि । एवके अछि । एवके बातक चीन पहुँच ।

तीनू : तँ आखिर हम करी की ? (एकहि संग)

अफसर : कहैत छी, अहाँ लोकनि अनंत क्षियक (रहस्य सुनयबाक मुद्रा मे) जनता राजनीतिसँ बोर भइ चुकल अछि । अखन कि ओ धर्मकेँ एखनो खूब मानैत अछि । जनता एखनो धार धर्म प्राप्त अछि आ' कला प्रेमी सेहो । ओ बुनू जे आकंठ अछि । तँ हम तँ विचार इएइ देब जे राजनीति अहाँ पहिने कऽ लिपऽ (दोसर लोक के देखैत)

साँवरिया : (चितित आ' अमुतापल भावें) मुदा पहिने राजनीति होमऽ लगलैक आ' एही बीच कतहु हमर महान नेताक प्राण छुटि जाति, तखन ? तखन हमर ई प्रार्थना सभाक एतेक रास लोकक भावनाक की हुएत ? की हुएत प्रार्थना सभा ?

कसो एक मोटय : प्रार्थना सभा शोक-तप्ता भऽ जायत । किफ बातें बदलत किने ? लोक तँ गहि बढलता । शोको सभा तँ आखिर करधे करव....

साँवरिया : अहाँ बातें ने बुझलिरै । ओजी जमिका लेल हम प्रार्थना करऽ चाहैत छिथनि सएह मरि जमलाह तँ हमर एहि प्रार्थना सभाक की दाम रहि जायत ?

कसो एक मोटय : रईये किलो । जे भाव पलाँकी सामक चलि रहल छैक । आर काहिह । (काहि पर साँवरिया ओकर तरेटी पक्षरवा पर चित्त छैक आ गारि पड़ु लगैत छैक सार... देखैत हम ।)

अफसर : (बुलवैत जकाँ) चुनू तँ । अमुतापल जुनि । याम रहत यी — दान रहल । समक काँही होबलाक चाहैत । संकथ । ऐना अर्थमे भेलसँ थोड़े हुएत । बलिक आरो विगड़िसे जायत कार्य । (क्षणिक थमि क') सेहो प्रार्थना तऽ भगवान आ भक्तिक वस्तु थिक । जनता कखनहु शान्ति मूनि कऽ काम बन्द कऽ कऽ प्रार्थना करऽ लागि जा सकैत अछि ।

बीर नहि हुएत एको रत्ती । तखन बाचल नाटक । तँ
नाटक सबसँ अन्तमे राखू ।

पहिल लोक : किएक, नाटक सबसँ अन्तमे किएक बी ?

अकसर : एहि द्वारे जे, जेके लोक एकर उपस्थित छथि ते बिना
नाटक देखेने तँ जाइत नहि जयताह । तावत धरि ठाढ़
रहताह ।

दोसरो लोक : किएक ? जनता बड़ बुद्धि जे एतेक-एतेक बाल ठाढ़
रहत ?

अकसर : नहि । नाटक सबके लोक संगैत छैक तँ ठाढ़ रहत । दोसर
बात जे एखन जे एखनका सामाजिक समस्या अछि ताहि
मे एएह टा रस्ता आवश्यक हएत । बुद्धियारी इएह
थिक । अनेरे 'हम तँ हम'क विचारमे जगड़ा आ' केर दंगा-
फसाद किएक हो ? आ' सखन शान्ति-व्यवस्थाक लेल
मुनिसे के मे जजबड पड़य ?

पहिल लोक : (किंचित लाचार आ उदास होइत) लेकिन भाय साहेब,
नाटक सबसँ पाछाँ ? सबटा प्रश्नक कएल-धएल हमर आ'
हमरे नाटक सबसँ पाछाँ । बाह ! कहूँ छैक जे जकरे
नायक शब्द लकरे पात भात नहि ? कमाल करैत छी
भाइ साहेब !

अकसर : भात किएक नहि ? अहाँ के तऽ रामे लाभ अछि । तावत,
यावत ई दुनू कार्यक्रम समाप्त होइत बहुत भीड़ जुमि
जायत नाटक देखेमे । बेसम्हार नै भऽ जायब भीड़ ।

पहिल लोक : मुदा भाइ साहेब, भीड़ तऽ राजनीतिक लेल जरूरी होइत
छैक । नाटकक वास्तु तँ हमरा दर्शक बाही । आ' ई एतेक
रास लोक अहाँके कम खुसाइत अछि । (उपस्थित समुदायके
देखैत)

अकसर : सेही वेष । मुदा आरो दर्शक जमा भऽ जाथि ताहिमे
अहाँके आपत्ति कोन ? नाटक आरो जमत ।

(तावत दोसर लोक अहाँ बड़िकऽ कहैत छैक)

दोसर लोक : आ' ओहनहुँ, ई ओला सभ हमर छथि ।

साँवरिया : (तनैत कथे) नहि, ई नभ गोठय हमर छथि ।

पहिल लोक : नहि । ई दर्शक हमर छथि ।

अकसर : (किंचित खीसाइत) भोह । एहिमे कोन लंदोवसी छैक भाय
दर्शक, दर्शक छथि । एहि सचजनिका पश्चिम ऐतमे ठाढ़
छथि । एहिमे बी बहुत विवाद छैक जे ई दर्शक ककर ?
(शान्त उठैत जनाक छथि देखि कऽ) ई दर्शक सभक छथि
कियेक तँ अहाँ तीनू गोटेक अपन अपन उद्देश्य अछि ।
आ' से काज तीनू गोटेक के एही दर्शक वा जनतासँ चलव-
वाक अछि । आ' से चलि जायत । आ बड़ सुन्दर नकाँ
चलि जायत । तखन एकर की विवाद जे ई दर्शक ककर
छैक ? ई दर्शक अहाँ तीनू गोटेक छथि ।

साँवरिया : मुदा से कोना संभव छैक बी ? ई कोना भऽ सकैत छैक ?
ई लोकनि एकाहि सभे हमरा तीनू गोटेक कोना बनि सकैत
छथि ?

अकसर : कियेक नहि ? एहिमे विकल्पिते की छैक ? बेरा बेरी अहाँ
लोकनि हिनका सबकेँ संबोधित करवनि । आ' यावतकाल
धरि अहाँ लोकनिक अपन अपन कार्यक्रम चलेत रहत
तावत ई लोकनि अहाँ लोकनिक वनब रहताह । एकक
जतन हएत, तँ दोसर गोटेक शनि जयताह । एहिना केर
दोसर गोटेक.....(मुग्र मध्ये) अपने देशक पब्लिकक ई
महानता जे काज धंधा छोड़ि कऽ एतेक-एतेक बाल
शोषण कयनिहारक सहयोग करवा लेल ठाढ़ रहथि ।
पब्लिकक ई महान सहयोग अहाँ लोकनिक सहजहि प्राप्त
अछि । लाभ उठथै जाइ जाइ ।

साँवरिया : (कपार पर अंगुरी घुमवैत) मुदा हमरा मु'झे ई रसि नहि
रहल अछि अहाँक ई बनरा-बाँट !

अकसर : (किंचित अपमानित अनुभव करैत) जेना मानि लिखऽ जे
पहिले राजनीति होइत तँ ई सभ ओला एहि साहेबक भऽ

जयधिन (दोसर लोकके देखवत), तखन अहाँक प्रोगाममे
अहाँक प्रार्थना कयनिहार लोक आ अन्तमे सबटा पशिक
नाटकक दर्शक बनि जयतैक—ओइ साहेबक लोक भऽ
जयतैक । (ओ पहिल लोक बिच आगुर देखवत कहैत छैक)

पहिल लोक : (जेना किछु मोचैत बिहूँसेन) चलू । ई नीके व्यवस्था भेल ।
नीके बात । अन्तमे नाटक रहलासँ सबसँ बीछल-बीछल
दर्शक आखिरमे खाली नाटकेक रहि जयताह । बेजाय नहि ।
जे कार्यक्रम उचितवला रह्य सएह होपबोक चाही
पहिले

दोसर लोक : तखन तँ हमही अन्तमे राजनीति करब ।

साँवरिया : ईहू, आव तँ हमही अन्तमे प्रार्थना-सभा करब ।

पहिल लोक : नहि । पहिले व्यवस्था ठीक अछि । ओहूनी तँ आइ-काहि
जीवन आ समाजमे जर्मक वास्ते लोक सबसँ पहिले राज-
नीतिमे आरम्भ करैये । रिटायर्ड डी० एम० सँ लऽ कऽ
मृत सेवाक आरोपमे तस्फैंड भेल कोनो खाना इन्चार्ज आ
आन कोनो पुनिख अधिकारी सभ । पहिले मोहल्ला बार्डक
राजनीति, तखन नगर-राजनीति ।

पहिल युवक : ओ भाइ साहेब खुल्वा गण कहियैक । हमरो अनुभव
सएह अछि । ठीक ।

पहिल लोक : देखीक किशेक कहब बंधु । एहना लोक सबमे, जिनकर
राजनीति नहि जयैत छनि से कोनो से कोनो फर्मक
मालिक वा ईश्वर वा जननेता के माथा पहिरा कऽ प्रार्थना
आ' आरनी पर उतरि जाइत छथि । हुनका लेल साप्ताहिक
एखबार छपऽ जयैत छनि । जनता तँ आशयो धर्मप्राण
अछि । कोनहुँ प्रार्थना हो, मूमि-झूमि कऽ आखि मुनने
बन्ध-बन्ध पर मूझी लडैत रहैए । आ एहि तरहें नाटकक
जन्म होइत छैक आ से जनता देखै-ए । बेर बेर देखै-ए
एहि प्रकारे राजनीति आ' धर्मसँ शिक्षा लेत सावधान
बनैए ।

दोसर लोक : (जौंसाइन) अहाँ तँ भाषण पानू कऽ देनियैक सौं !
आखिर अहाँ की चाहैत छी ?

पहिल लोक : इएह जे पहिले अपने राजनीति शुरू करू । तखन ओ
प्रार्थना-सभा करब आ' अन्तमे हम नाटक करब ।

(अफसर बिशेष मंगिमासँ दोसर लोक के देखैत जेनागोस्ता-
हित करैत छैक तखन तीनू बाबेदार फससऽ बजैत छैक)

दोसर लोक : जेण तँ पहिले हम राजनीति शुरू करैत छी ?

साँवरिया : ठीक छैक । तखन हम प्रार्थना-सभा करब ।

पहिल लोक : ठीक छैक । तखन अन्तमे नाटक हेतैक ।

अफसर : (आगाँ बडूँन) ठीक । ई व्यवस्था उचित । आ' बेहूत कि
एतऽ परिस्थिति अछि, एखन, ई व्यवस्था खूब सोसरायल
आ सभक पक्षमे भेल-ए । (ओ सन्तुष्टिक हवात घोषित
छथि ।)

दोसर लोक : तखन, आरम्भ करू हम ? (अफसर आ बर्षक के पूछैत)
उपस्थित सज्जन बुन्द

(कि तावतहि एकटा दुःखी आफत-हारल भिखारि सर वृद्ध
एक दिससँ बर्षक सभके हटवैत अगाँ अर्धैत छैक । सभक
ध्यान ओकरा दिस चलि जाइत छैक । ६० वर्षसँ कम केर
नहि हेतैक । ओकर एहि आकस्मिक उपस्थितिसे 'दोसर
लोक' खीसा जाइत छैक आ' क्रोधित भऽ जाइत छैक)

दोसर लोक : हो बुढ़ा ! की छऽ एतऽ ? चलऽ ओम्हर कातमे जाकऽ ठाढ़
भऽ जाऽ । भाषण चुनऽ ।

वृद्ध : नै हजूर, हम भामन मुनऽ नहि आयल छी । हम त बड़का
विपत्तिमे पड़ल छी सरकार । हमर वेटा आइ तीन दिनस,
जानि मे कतऽ निपत्ता भऽ भेल-ए । तकरे हम चाहै छियै
जे कहना कऽ ओकर पता लागि जयतै....।

दोसर लोक : रे त ओकरा पता लगववाक ई कोन जनह भेटलह-ए तोरा ?
अरे ओ गेल हेतऽ पड़ा कऽ बम्बई फिममे राजेश खन्ना
बनऽ गेल । एतऽ पता चलतऽ ओकर ? आ, आ' एखबार

सबसे अंगरेजीमें हिन्दीमें सबसे, ओकर फोटो छपा रहक
...मुदा एतः से एखन बलि जा। (खौसाइत) एतः एखन
बड़ जरूरी कार्यक्रम बलि रहल छैक। आइ काहि सभ
छौड़ा सब पड़ा-पड़ा कऽ बम्बइसे जाइ-ए।

बृद्ध : नै हजूर ! हमर बेटा तेहन नै है।

बोसर लोक : अच्छा बाबा, बड़ साधु छऽ तोहर बेटा तैं जा मे तकहक
ग ने। जबरि छपावऽ एखबारमे।

बृद्ध : एखबारमे त बहुत कर्मिया लैं है। ओतेक टाका हम कहाँ
पावो बाबू। कहाँ स लाउ ?

साँवरिया : त रेडियो टीसन जा ओहीमे सूचना प्रसारित करवा रहक।
मुनै छियै ओतः रकैया नहि लगैत छैक ! ओतहि जा।
एतः नै मुदा जतनी हटऽ। किएक तैं एतः बड़ जरूरी
प्रार्थना सभा सेहो होमऽ बला छैक। बलिक छहरि कऽ तोहूँ
ओहिमे भाग लइए लए पाछाँ जइहऽ रेडियो टीसन।

बृद्ध : ओतहि स त आवि रहल छी सरकार। ओतऽ कहलक जे
ई फारम (फारम बेखसैत) भरवाऽ कऽ आनऽ। ई छियै
अंगरेजी बहादुरक फारम। हम पढ़ल ने लिखल। कतेक
लोक के मोड़ हाथ धयलौ त एक मोटय ई फारम भरि
देननि। नऽ गेलियै एतेक परचण्ड रीयमे। बलि नहि
होअब बादमे तीन ठिवाँ बैसैत पहुँचली रेडियो टीसन।
देतियै। त ओ साहेब ऊनटा-पुनटा कऽ देखलक आ' घुरा
देलक जे एकरामे थाना का मोहर कतऽ है ?

पहिल युवक : देखी बाबा फारम। (ल' कऽ देखैत) समस्या हिन्दुस्तानी
आ' फारम अंगरेजी।

बृद्ध : हमरा की मालूम जे एकरामे थानाकेँ मोहर लगावऽ पड़ैहै
ओकरा तखने फारमे दै बेरी कहि वेब उचित नै छलै ?
हम बूढ़ लोक विपत्तिक भारल। कतेक फिफियेली ओ
नहियै टा मानलक। की करिती ? केन मोड़ घिसियबैत
नगडाइत थाना पुलिस कतऽ। के मुनैहय ? गरीबक बातकेँ
के मुनै है बाबू ?

पहिल युवक : की भेल, थाना पर की भेल ?

बृद्ध : मोहर दै जे कहलियै त बाजल जे मोहर मंगनीमे मिलै है
बूढ़ा ? थानाक मोहर है कि थोनी दोकानक ? आनऽ
बीत गो रकैया तखन फारम पर मोहर लगयवऽ।

पहिल युवक : (सहायुभूति आ' क्रोध सं) तखन फेर ?

बृद्ध : की होइतै बच्चा। हमरा लग त खाइकेँ पाइ छैहै ने कहाँ
स दितिअइ ? (ओ लगभग बकोर, लागि कऽ कानऽ
लगैत छैक। चाक कात आशा उम्मीद सं देखैत छैक
आ धाकि कऽ ओही ठाम बैसऽ लगैत छैक)

दोसरे एक मोटय : किएक नपत्ता भेल ? एक्के टा बेटा अछि बाबा अहाँकेँ ?

बृद्ध : ई दोसरका बेटा छेलै। बड़ तेजगर। सब मुझी सब
ओकर परसंसे करै छेलै। कोभेज गेलै आ ओइ दिनसँ ओ
कहाँ गेलै से पतेने चलल। हा भगवान !

दोसरे एक मोटय : आ अहाँक दोसर बेटा ? (साँवरिया आ' बोसर लोक
ओकर एहि बातसँ खौसा रहल छैक आ क्रोधित छैक)

बृद्ध : (जोरसँ साँस धीबैन) ओऽ ? ओ त उहे जे बीहतरिमे
भेल छेलैए। इस्कूल कोलेज सबमे बम्बूक चलल छेलैए
तहीमे ओकरी बम्बूकलगा देलबै (कनोक घाव करैत जकाँ)
हमरा सब त ओकर मुँहोँ मे देखि सकलियै घुरि कऽ।
ओकर माय गाव जकाँ हुकड़ि हुकड़ि कऽ प्राण दऽ देलकी।
हमरा सब ओकर मुँहोँ कहाँ देखलिये घुरि कऽ (ओ कानऽ
लगैत छैक)

बोसर लोक : (जेना एही अवतरक ताकमे हो आ' एकर साम उठवैत
बाजऽ लगैत छैक) हँ ! देखि लियौ समाजक लोक ! देखि
रहल छियै अन्धायक पराकाष्ठा ! कतेक बापसँ ओकर
बेटा बिछुड़ि गेलैक। मोली खयलक। जान देलक। सँयो
हमरा अहाँ, सबकेँ ई लोकनि बोले भरोस दैत छथि।
आपवासन जे चिन्ता, दुख आ चवड़पवाक बात नहि। पैघ-
पैघ सामाजिक क्रान्तिक दौरमे, महान परिवर्तन पावामे

ई सब होइतहि छैक। (बूढ़ के एक बिस इलारा करैत कइत छैक) ओम्हर जाकऽ ठाढ़ भऽ जा। हमर भाषण सुनऽ। शान्ति भेटतऽ। चित्त स्थिर होतऽ।

बूढ़ : (क्रोध आ' लाचारी सँ) केहन राक्षस छी यी नेता जी ! खताउ। हम अपन बेटा ताकऽ आवल छी आ' अहाँ हमरा भासन सुनबै छी। बोल दैत छी। हए त दिवऽ ने बीस गो दके। कजँ दिवऽ। ऐ बुहारियोमे कमा कऽ घुरा देख। दिवऽ ने बीसटा टाका। जाकऽ दिवइ थाना बला के, आ' कारम पर मोहन दिया क' रेडियो स सुनवा दिवै अपना बेटाक मादेमे (अकस्मात जेना आत्म विस्मृत होइत) हमर बेटा ! जे कि सुनत-बाहे कतहू हो, दौड़ले जलि आउत। ओ थम्है यला नेता नै हे। हमरा बहुत मारै है।

दोसर लोक : (क्रोधसँ) बड़ा मोश्किल। अरे की अपन बेटा पुराण सऽ कऽ बैसि गेलऽ हो ? जा ने एक रत्ती कात भऽ जा ने। ककरोसँ टाका माँगि लए। हम कतऽसँ देवऽ ? राह बता त आगे चल। हमरा लग रईसाक ताछ अछि की ? जा हुटऽ एतऽ तँ। कार्यक्रम होमऽ रहक। (गला खणसि कऽ) हँ तँ भाय आ' बहिन दाई....

बयो एक मोटय : (स्वयं सँ) भारी अकसोच नेताजी। एखन धरि एकहु टा यहीन जी नहि पधारि सकल छथि।

दोसर लोक : (अनडिपरीत) देखि रहल छी आदमीक हालति ? नाबो-जालसँ बचर। एखनहि एहि पिता मुख्य बूढ़ के अहाँ लोकनि देखलियनि ? देखलियनि बेचारेक दुख, विपत्ति आ' लाचारी ? इएहू टा नहि छथि। समाजमे बहुतो लोक छथि एहन जे मरि मरि कऽ जाँचि रहल छथि। दिन राति शोषणक महाबलमे विसाहत जीवि रहल छथि। हुनका ज्ञान नहि, शिक्षा नहि....। तेँ आवश्यक अछि राजनैतिक समझदारी-जग चेतना। जाहिसँ कि हमर कष्ट-समस्या दूर भऽ सकय। अहाँ लोकनिकेँ बुझल नहि हएत जे जाहि समाजमे मनुष्यक राजनैतिक चेतना आ समझदारी जतेक

कम रहैत छैक ताहि समाजक जनताक सत्ता द्वारा ओतबे बेसी शोषण होइत छैक। तेँ हम तखने सँ, बेर-बेर कहि रहल छी जे हमरा लोकनिकेँ सचेत रहबाक अछि। हमरा लोकनि के जाग्रत रहबाक अछि आ' गिरीह निरखर अक्षिप्त जनताकेँ सुझबाक अछि सबके। गामक शोति-हारकेँ शहरक निम्नवर्गीक लोक सबकेँ जे ओ अपन अधिकारकेँ पसबाक वास्ते बाँइक उट्टा बाहि कऽ ठाढ़ भऽ जाथु। आ' लड़वा लेल तैयार भऽ जाथु।

बयो एक मोटय : लड़वा लेल तैयार भऽ जाथु। मुदा लड़थू नहि। (स्वयंसँ) खाली लड़वा लेल तैयार रहथु।

दोसर लोक : (क्रोधसँ) देखू सभामे उपद्रव पुनि कल। नै तँ अहाँ सन-सन उपद्रवी के ठीक करब अबए हमरा। (ओ बुनू सीनू बिस एक बेर नजरि डोड़बए आ' जेना अपना आदमी सबके अपना अपना स्थान पर मोस्तैद तेनात बाधि कऽ निश्चित भऽ जाइत अछि) है, तँ हम कहैत रही लड़वा लेल तैयार रह। नहि तँ ई संसार नहि बदलत। हम कहैत छी, हमहीं किएक हमरे जकाँ संसारक सब महान चिन्तक दार्शनिक सब सेहो इएहू कहने छथि जे बिना एकदरे नहि हएत समाजक दुःख दूर। नहि भ' सकत मनुष्य एहि शोषण-चक्र-चांगुरसँ मुक्त आ ने राजनैतिक चेतना जगयबामे सकिय साकांक्षा राजनैतिक चेतना जगयबामे अहाँ अपन तन-मन-धन सब किछु लगा दियऽ। तखनहि लोकक दुख दूर भऽ सकतैक आ' दुनियाँ बदलि सकतैक।

(ताबतहि साँवरिया माइक लग आबि कऽ दोसर लोक के कानमे किछ कहैत छैक। भाषण देनिहारक चेहराक भावसँ खुश रहल छैक जे ओकरा भाषण जल्दी खतम करवा लेल कहि रहल छैक। आ' ओ 'तुरन्त खतम कऽ रहल छी'—क आश्वासन दऽ रहल छैक मुदा बजिते जाइत छैक। साँवरियाक चेहरा उदास भऽ जाइत छैक। ओ बेर-बेर

अपन गरदन हंसोधि रहल अछि, जेना कि ओकरा कंठमे कुबकुची उठि गेल होइक)

दोसर लोक : हे त भाय लोकनि ! सबसँ बड़का वस्तु होइत अछि राजनीतिक कुलाकपन । राजनीतिक ज्ञान । आ' से ज्ञान जनताक बीच बढायब....

(अनकोके से साँवरिया माइक छवटि खेत छेक । कनोक शोका-तिरी गेहो होइत छेक बुनूमे अगतः माइक साँवरियाक हाथमे आवि जाइत छेक ओ जखी उखी बाजऽ लगैत अछि)

साँवरिया : (हठबहावल सन कमे) बड़ भ' गेल ओता लोकनि ई नेताजी सँ पुरा समय मोटि गेलखिन । अही दुआरे, पहिने कंट्रिबट भऽ गेल छलैक । तैयो ओ एकरा नहि निवाहलनि । क्यो जिम्मेदारी बुझबे ने करैत छैक तँ । अहाँ लोकनि जनिबे छी जे एखन अपना सबक मोलाँमे-कतेक पैस उत्तर-दायित्व आओर पुनीत कर्मस्थ ठाढ़ अछि ? अपने लोकनि सब मोटय इहो जनैत छी आ' धिगतासँ बताह भऽ रहल छी जे हमरा लोकनिक महान नेताजी बड़ा अस्पतालमे अक-तक हासत ने अस्वस्थ छथि । ईह आत्मा जे देशवासो लोकनि के भयानक महा भिशाक महाम्भकारमे प्रकाश प्रदान कयलनि । हमरा लोकनिकेँ समृद्ध बनौलनि । आ' खराबी तथा भ्रष्टाचारसँ लड़वाक नीतिक शक्ति प्रदान कयलनि । एहेन युग पुरुष । अपन एहेन अमर नेता आइ मरि रहल छथि । तिनके बीघाँयु वनसधाक लेल हमरा लोकनि सब मोटय एतऽ सामूहिक नागरिक प्रार्थना करवाक लेल एकट्ठा भेल छी । एही उद्देश्य सँ जे हुनक प्राण-रक्षा भऽ सकनि—हमरो लोकनिक औदी हुनका भेटि सकनि—त्वमेव माता व पिता त्वमेव... (पाठ करैत)

यो एक मोटय : मुदा ए' यी भाय माहेव, जखन अहाँक महान नेता अपने अमर छथिये तखन हुनक प्राण रक्षा लेल एतेक रात लोकके व्याकुल भऽ कऽ प्रार्थना करवाक की जरूरति ? अमरकेँ

तँ अर्थे होइत छैक जे गरय नहि । ई तँ ओहूने नहिँय मरलाह । अहाँ कियेक गरल जा रहल छी हुनका लेल ? निश्चिन्त रह ।

साँवरिया : (कोधसँ बेधैत) बड़ नास्तिक बुझाइत छी यी । एहेन नास्तिक स्वर ! हा नदखर नागर ! एहेने अनारथावादी चरित सब मिलि कऽ हमर संपूर्ण राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक आ' सांस्कृतिक मूल्यकेँ ध्वस्त कऽ बेतक अछि । एएह लोक सब संस्कृतिक शत्रु होइत अछि । हमर महान नेता एहेने संस्कृति-विरोधी घण्टिक विरुद्ध हमरा लोकनि के एकजुट होवऽ आ' एकरा सँ लड़वाक मार्ग प्रशस्त कयलनि आ' लकरा अपना चरित्र बल सँ आलोकित इजोत कयलनि । युग-युग धरि हुनक ई राष्ट्र-सेवा हमरा लोकनिक पथ प्रदर्शक बनल रहल । (चेतवैत जकाँ ओहि युवक बिस संकेत करैत) एहेन लोक सबसँ हमरा लोकनि केँ चेतल रहवाक चाही पीवीसो घंटा (तखने जेना फेरो ओकरा अपन रोगी नेता मन पड़ि जाइक । भविष्य भाव सँ ओ आँछि भूनि खेत अछि । हाथ जोड़ि कऽ ऊपर उठा खेत अछि, आ' व्याकुल भऽ बजैए) ईश्वर ! हिनका, हमरा सज्जे रहवा लेल सदा सर्वदाक वास्तै छोड़ि दियनू जाहिसँ कि हमर जीवन-पथ, हिनक उपस्थितिसँ शुभ-प्रकाशसँ आलोकित रहय । ई सदा हमरा लग रहयि ।

यो एक मोटय : तँ की, अहाँ अमर छी प्रार्थना-पुरुष जी ? नहि तँ कोना रहि सकब बुनू मोटय सदा सर्वदा संग, अपने लोकनि ?

साँवरिया : (क्षिप्तयाइत) अहाँ लोकनिमे एकहु रती क्षिष्टाचार आ' मर्यादाक संस्कार नहि अछि । धिक्कार अछि । कहु भवा ! अहाँ लोकनि एतेक टा पुण्य कार्यक लेल एतऽ उपस्थित छी आ' अहाँ बाण जकाँ अपन वचन चला-चला कऽ हमर ई बल भ्रष्ट करऽ चाहैत छी ? हिसाक बातावरण करऽ चाहैत छी ! अहाँ लोकनि तँ सध्यः बुझाइत छी जेना ऋषि-

मुनिक पावू 'राक्षस-गण हीड आ' उपद्रव उत्पात मचा रहल होइ । अस्तु जे हो (मस्तर पड़ैत छैक)

छमा धरन को चाहिये,
छोटन को उत्पात ।

भाइ लोकनि, बहिन लोकनि आ' अन्तान्य सज्जन बृन्द !
आपुन ई उपलक्ष हुनकहि खातिर थिक, अपन अमर
आश्रित अस्वरूप नेताक स्वास्थ्य लाभक प्रार्थनाक हेतु ।
थाइ एतऽ हमरा लोकनि 'भगवानस' अपन ओही महान्
नेताक औषधी माँगऽ, सामूहिक प्रार्थना करवाक संकल्प
लऽ कऽ एतेक बेसी संख्यामे उपस्थित भेल छी । प्रार्थना
करवाक लेल । (ओकर एहि घोषणाक' एहि बेर पशंक
गण एक दूसराक मुह ताक' लगैत छैक जेना सब सोचि
रहल हो, वेश सूर्य बनाओल गेल । ताही बीच एकटा
ओरसर आवाज श्रवैत छैक)

बमो एक गोठय : नहि-नहि प्रार्थना करऽ नहि, हमरा सब नाटक देखऽ आयल
छी, नाटक !

बमो दोसर गोठय : हमहूँ नाटके देखऽ आयल छी ।

कएक स्वर : (एहि सङ) हमहूँ नाटक देखऽ आयल छी ।
हमहूँ हमहूँ हमहूँऽऽऽ

हमरा लोकनि सब गोठय नाटक देखऽ आयल छी ।

एक स्वर : चन् भाव ! आव नाटक चाबू करू । (फेर तखने हस्ता
उठऽ लगैत छैक—'नाटक शुरू करू, जल्दी नाटक शुरू
करू ।')

(एही बीच भीड़री नेता निकलि गेल रहैत छैक । आ
किछुए सकेण्डक भीतर, पाछाँ दिससँ खूब जोर सँ आवाज
आबऽ लगैत छैक 'भामे जाड भामे जाड । पुलिस आबि
गेलैक । सब गोठय एतत' पड़ाइ जाड । भागि जाइ जाड
एतस' । ई पब्लिक प्लेस छैक, अशान्त नहि करियौ । हटू

भागू एतऽ स' । एतऽ ई सब किछु गहि हे धमाक बाहो ।
भागू एतऽ... बसबा नहि करू, पुलिसक सीटी बज्य-
बाक ध्वनि अबैत छैक आ' सैह स्थल फेर कहऽ लगैत छैक—
भामे जाड । लाठी चार्ज हूएत... एक मिनटक समय बेल
जाइत अछि तकराबाद लठी चार्ज । पुलिसक सीटीलगातार
बजैत छैक । भगवद् मच्चि ज इत छैक ।

एही भागा-भागीमे कात दिस बैसन बृद्ध के धक्का लागैत
छैक । ओ सम्हरैत उठैत अछि आ लग सँ जाइत एक गोठय
के पुछैत छैक)

बृद्ध : हमर बेटा कोना मिलतै बाबू ?

(ओ व्यक्ति ओकर उपेक्षा करैत चलि जाइत छैक । बृद्ध
बुःखी आ' अनिश्चित जकाँ ठाढ़ रहैत अछि । ताबत
ओकरा बिस 'पहिल लोक' अबैत छैक । ओकरो सँ बड़
आत्त' भावै पुछैत छैक)

बृद्ध : आव हमरा बेटा द रेडियोमे के बोलतै ? हमर बेटा
कोना मिलतै बाबू ?

पहिल लोक : (बृद्धक बाँहि रतेह सँ धरैत बहैत छैक) चिन्ता नहि करू
बाबा ! हम सब अहाँ सङे थाना कोतवाली चलैत छी
आ' ओतऽ सँ चलब आकाजगानी ।

(तकरा बाद बेरा बेरा सब अभिनेता, बृद्धक मुँह कात जमा
भ' जाइत छैक मुदा ओहिमे 'साँवरिया' 'दोसर लोक' तथा
'अफसर' नहि छैक । सब कलाकार बृद्ध के आगाँ लऽ चलैत
सामूहिक स्वरमे गाबऽ लगैत छैक)

"आबहु सब मिलि राबहु भारत भाई,
हा हा ! भारत बुईशा न देखी जाई ।

□ □